RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 1 अंक 6 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद की एकमात्र लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका फरवरी 2018

महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

liverajsamand.com

पेज संख्या : 36 राजसमंद

स्वच्छ भारत मिशन की कहां तक सार्थकता ?

शराब की दुकानों पर ओवररेट का ठेका

ई-मित्र

e-mitra

बिजली, पानी, टेलीफोन के बिल,
जाति प्रमाण पत्र, मुल निवास प्रमाण पत्र,
राशन कार्ड इत्यादी कार्य किए जाते हैं।

9782106975

Vikrant Paliwal vikrantpaliwal@gmail.com

RS-CIT

Digital India Power To Empower

● ITZ Cash ● IRCTC (Rail//Air Ticket) ● Pan Card/Passport

DIVYAM ONLINE SERVICES

पालीवाल मार्केट, कांकरोली, जिला राजसमंद (राज.)

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

डॉ. दर्शना व्यास सिंगला
M.B.B.S., D.G.O (बॉम्बे हॉस्पिटल, मुम्बई)
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
फेलोशिप ट्रेनिंग लेपरोस्कोपिक सर्जरी
पुर्वानुभव :
बॉम्बे हॉस्पिटल, मुम्बई
सर.एच.एन. हॉस्पिटल, मुम्बई
माँ गायत्री हॉस्पिटल, उदयपुर
राजकीय मेडिकल कॉलेज श्री नगर (उत्तराखण्ड)
राजकीय मेडिकल कॉलेज, सोनीपत (हरियाणा)
ASHIRWAD HOSPITAL
आशीर्वाद हॉस्पिटल
Healing Hands Caring Hearts
आशीर्वाद हॉस्पिटल
राजसमंद/कांकरोली की स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार
सुविधाएं
नार्मल डिलीवरी
गर्भवती स्त्रीयों की जांच
हाई रिस्क गर्भावस्था
निसंतानता का ईलाज
असामान्य गर्भ (ECTOPIC PREGANCY)
सिजेरियन ऑपरेशन
ओवेरियन सिस्ट का ईलाज
सफेद पानी का ईलाज
माहवारी संबंधी रोगों की चिकित्सा
कॉपर टी, परिवार नियोजन
नसबन्दी
बच्चेदानी का ऑपरेशन
बच्चेदानी का बाहर आना
बच्चेदानी की रसौलिया
अण्डाशय की रसौलिया
समस्त स्त्री रोगों की चिकित्सा
रक्त की जांच लेब टेस्ट
ECG
3D-4D रंगीन सोनोग्राफी
An Initiative by Bombay Hospital, Mumbai Alumni
50 फिट रोड, टी.वी.एस. चौराहा, कांकरोली 313324, जिला-राजसमंद फोन : 02952-225005

Su-Kam SOLAR
Our TECHNOLOGY is built to last, so is our WARRANTY!
25 Years WARRANTY
#GoSolarWithSukam
Su-Kam SOLAR
SunWay
THE FUTURE OF SOLAR STREETLIGHTS
Su-Kam SOLAR
UTL
SUNPACK
SunRay Klassic
Performance that is Class apart
7 YEARS WARRANTY
MNRE Approved
बिजली के बिल से छुटकारा पाएं अपने घर सोलर सिस्टम लगवाएं
अब बहुत ही सस्ती दरों पर भी सोलर घरेलू बिजली व कृषि के वाटर पम्प लगवाएं।
सोलर सिस्टम्स इंटरप्राईजेज
खुशबू मार्केट, टी.वी.एस. चौराहा, कांकरोली, राजसमंद 7568801751

सम्पादकीय

नाली के बिना स्वच्छता कैसे ?

हम खुले में शौच की वकालत नहीं करते हैं लेकिन बीमारियों को न्यौता देती नालियों का विरोध अवश्य करेंगे। गांव–ढ़ाणी तो दूर शहरों में भी कहीं भी बंद नालियां नहीं है। जिन रोगाणुओं से बचने के लिए खुले में शौच नहीं करके शौचालय बनाने की पैरवी की जा रही है। क्या शौचालय से खुली नालियों में बहने वाले पानी में वो रोगाणु नहीं फैल रहे हैं। गांव के दूर जंगल से तो वो रोगाणु घर तक पहुंचने में समय लगाएगा मगर घर के बाहर की नाली से तो तुरंत घर में आ जाएगा। इससे खुले में शौच मुक्त और स्वच्छता भारत मिशन की सार्थकता पर ही सवाल खड़े हो गए है। जब नालियां खुली रहेगी तो गंदगी और रोगाणुओं से सुरक्षा कैसे संभव है। जिन देशों ने पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्ति प्राप्त की है। वहां की नालियां पूर्ण रूप से ढकी हुई हैं। यदि नालियों में बीमारियों के कारक पनपते रहेंगे तो कैसे हर कोई स्वस्थ रह सकेगा। इसलिए शौचालय के साथ बंद नालियों का निर्माण भी उतना ही आवश्यक है, जितना शौचालय बनवाना।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
उप सम्पादक व निदेशक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
	हीरालाल, भीम
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल
	(श्रीराम स्टूडियो, कांकरोली)

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला–राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी :** स्वच्छ भारत मिशन की कहां तक सार्थकता ? पेज – 5
2. **कवर स्टोरी :** शराब की दुकानों पर ओवररेट का ठेका पेज – 7
3. **तीखी मिर्ची :** बिचारा बेवड़ा पेज – 9
4. **लेखक संस्मरण –** एक संवेदनशील लेखक का अर्थ पेज – 10
5. **स्वास्थ्य सलाह :** 25 फीसदी लोग डायबिटीज से ग्रसित पेज –12
6. **कानून और अधिकार :** शिक्षा मूल अधिकार हर नागरिक पेज – 13
7. **व्यंग बाण :** जब सुंदरी पर दिल आया तो कंजूस पांडेजी ने दी छूट पेज – 14
8. **विकास को दिशा :** धर्मतंत्र व राजतंत्र की समन्वित सोच... पेज – 16
9. **माटी का लाल :** कांकरोली रौ जाबांज शहीद नारायण सनाढ्य पेज – 18
10. **राजसमंद की खास खबरें :** शराबबंदी, समस्या, सामूहिक विवाह पेज – 20
11. **कविता:** जागो रे भारत रा वीरां व मेवाड़ रो मान तथा रिश्ते पेज – 25
12. **आध्यात्म :** जानिये क्या है महाशिवरात्रि की पौराणिक कहानी पेज – 26
13. **मासिक राशिफल :** फरवरी 2018 पेज – 28
14. **पाठक प्रतिक्रया** पेज – 30
15. **मेवाड़ी चौपाल :** दाँत नी, माँ वाल्ली पेज –32
16. **कड़वा सच :** शौचालय बनाम किराणा स्टोर पेज – 33

आवश्यकता

मार्केटिंग और रिपोर्टिंग कार्य के लिए

फुलटाइम/पार्ट टाइम ऊर्जावान युवकों की आवश्यकता

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका सम्पर्क : 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग करा सकते हैं।

भीम – हीरालाल मो 99296396015
देवगढ़ – अर्जुन सालवी मो. 9414364131
रेलमगरा – रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट – मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ – देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा– भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल – हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया – विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा – कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर – प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624

गुस्ताखी माफ

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक बुकिंग

सिर्फ 150 रुपए में

आपकी सेवा में हमेशा तत्पर शुद्ध, स्वादिष्ट एवं ताजा मिठाईयां

श्री बीकानेर स्वीट्स

शादी-पार्टी के ऑर्डर लिये जाते हैं

जोधपुर की प्रसिद्ध मावा कचौरी
हर समय उपलब्ध, स्वाद ऐसा की
एक बार खाओगे, तो बार-बार खाओगें।

ड्राई फ्रूट मिठाईयां,
मावे की मिठाईयां
देशी घी की मिठाईयां , बंगाली मिठाईयां

सेठ भगवानदास मार्केट, जल चक्की रोड़, कांकरोली, जिला-राजसमंद मो. 8290127574

स्वच्छ भारत मिशन की कहां तक सार्थकता ?

जयवर्द्धन पड़ताल पहले जंगल में था मल, अब घर के बाहर फैल रही गन्दगी

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

यह सच है कि कचरा, पर्यावरण का दुश्मन है कचरे से बीमारी और बदहाली आती है और स्वच्छता से स्वास्थ्य एवं समृद्धि। कुछ इसी ध्येय से केन्द्र सरकार ने हर घर में शौचालय बनवाने की मुहिम शुरू की, मगर सच यह है कि शौचालय कागजों में ही बन कर रह गए। शौचालय की जमीनी हकीकत न तो सरकारी उपलब्धियों से मेल खाती और न ही स्वच्छता का सपना साकार हो पाया है। पहले खुले में शौच से गन्दगी जंगल में फैल रही थी, जो आबादी क्षेत्र तक नहीं पहुंच रही है, मगर अब नाली के अभाव में घर के बाहर ही गन्दगी फैल रही है, जो लोगों की सेहत के लिए जंगल में खुले में शौच से भी ज्यादा खतरनाक हो गई है।

2014 में स्वच्छता मिशन की शुरुआत के साथ ही जागरूकता की आंधी चली, साफ सफाई को लेकर विभिन्न माध्यमों से जन चेतना लाने की सरकारी कवायदें हुई, लेकिन हकीकत उन सभी कोशिशों को सिर्फ झुठलाती नज़र आई। कार्मिक, अफसर, पंच-सरपंच से लेकर नेता व आला अफसर तक ने भी खुले में शौच मुक्त गांव का दृढ़ संकल्प लिया, लोगों को खुले में शौच ना करने की नसीहतें दी और दीवारों पर शौचालय बनाने और उसके नफे नुकसान को पोता गया। आंकड़ों में लक्ष्य अर्जित करने की खानापूर्ति के चलते कई जगह सिर्फ नाम मात्र के ढ़ांचे खड़े कर दिए, तो कहीं बगैर सेफ्टी टेंक के सोख पीट के नाम पर छोटा खड्डा खोद कर शौचालय बना दिया। अंडर ग्राउंड नालियां तो क्या ज्यादातर जगह नालियां तक नहीं है, जिससे गन्दगी सड़कों पर पसर रही है। इस गंभीर हालात को जानते हुए भी पंच, सरपंच से लेकर अन्य जनप्रतिनिधि व अधिकारी भी अनजान बने हुए हैं और चारों ओर आंकड़ों में खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) होने का ढिंढोरा पीट रहे हैं। जब तक शहर व गांवों में पुख्ता नालियां नहीं बनेगी, तब तक स्वच्छ भारत मिशन की सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकेगी।

निर्मल ग्राम एमड़ी में शौचालय का ढ़ांचा।

बिना पानी के 60 फीसदी शौचालय

एनएसएसओ द्वारा देश में किए गए सर्वे के बाद जारी रिपोर्ट के मुताबिक देश में पानी के अभाव में 60 फीसदी शौचालय तो इस्तेमाल लायक ही नहीं है।

कागजों में प्रधानमंत्री का सपना

स्वच्छ घर, गांव व शहर बनाने और खुले में शौच मुक्त की प्रधानमंत्री का सपना कागजों तक सीमित रह गया है। राजसमंद जिले की सभी 207 पंचायतें ओडीएफ घोषित कर दी, मगर अब भी कई लोग खुले में शौच कर रहे हैं और कुछ शौचालय में ही शौच करने के बावजूद पहले से ज्यादा गन्दगी सामने आ रही है।

निगरानी कमेटी नहीं गंभीर

समुदाय आधारित स्वच्छता मिशन के तहत शौचालय का नियमित उपयोग करने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित, प्रोत्साहित करने व प्रशिक्षण देने का भी प्रावधान है। लेकिन हकीकत यह है कि ज्यादातर गांवों में लोगों को जागरूक करने के लिए कोई ठोस और नियमित प्रयास नहीं हो पा रहे हैं। इसके लिए ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला स्तर तक अलग अलग निगरानी कमेटियां भी गठित है, लेकिन ये समितियां भी लगभग निष्क्रीय है।

फिर कैसे किया ओडीएफ सत्यापन

ओडीएफ पंचायतों में आज भी लोग खुले में शौच कर रहे हैं, तो सिर्फ ओडीएफ घोषित पंचायत का सत्यापन करने वाली टीम की भूमिका सवालों के घेरे में है। जब टीम ने गांव गांव जाकर शौचालय देखें, उसके उपयोग और गांवों में खुले में शौच के हालात होने के बावजूद ओडीएफ सत्यापन की पैरवी किस आधार पर कर दी। इसको लेकर ओडीएफ सत्यापन करने वाली टीम की कार्यप्रणाली ही संदेह के दायरे में आ गई है।

सामुदायिक शौचालयों पर ताले

कुंवारिया में बंद सामुदायिक शौचालय

ज्यादातर गांवों में सरकार द्वारा बनाए सामुदायिक शौचालयों पर भी ताले लटके पड़े हैं। राजसमंद, नाथद्वारा, देवगढ़ व आमेट शहरी क्षेत्र के से लेकर निर्मल ग्राम पंचायत पिपलांत्री के साथ सभी पंचायतों की यही स्थिति है। इसके लिए न तो कार्मिक नियुक्त है और न ही बिजली, पानी व सफाई के प्रबंध हो पाया। इस कारण ज्यादातर सामुदायिक शौचालयों पर ताले लगे हुए हैं।

अफसरों के शपथ पत्र भी झूठे

स्वच्छता मिशन व खुले में शौच मुक्त गांव बनाने को लेकर जिला प्रशासन ने सभी विभागीय अधिकारियों ने यह शपथ पत्र दिए कि सभी कार्मिक व अफसर शौचालय का उपयोग कर रहे हैं। ऐसा ही शपथ पत्र पंच, सरपंच से लेकर सभी जनप्रतिनिधियों ने भी दिए, मगर गांवों में कई कार्मिक और जनप्रतिनिधि उसका उपयोग नहीं कर रहे हैं।

शराब की दुकानों पर ओवररेट का ठेका

जयवर्द्धन पड़ताल ▶ **घरों व ढाबों पर खुलेआम देर रात तक बिक रही अवैध शराब**

जिम्मेदार बने हुए हैं अनजान

हितेन्द्रसिंह चौहान @ जयवर्द्धन न्यूज
liverajsamand.com

राजसमंद. जिले में शहरी इलाके के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र की कानून कायदे दरकिनार कर शराब दुकानों पर खुलेआम ओवररेट वसूली जा रही है। देसी व अंग्रेजी शराब पर तय दरों से 10 से 20 फीसदी अधिक राशि वसूली जा रही है। शराब ठेकेदारों की मनमानी इस कदर है कि राजसमंद जिले में एक भी दुकान पर शराब की दर सूची चस्पा नहीं है। फिर भी न तो आबकारी विभाग द्वारा कोई कार्रवाई की जा रही है और न ही पुलिस महकमा गंभीर है। इस कारण लोगों सौ रुपए की बियर के 120 से 130 रुपए चुकाने पड़ रहे हैं। यही नहीं, रात 8 बजे बाद भी उन्हीं ठेकों पर शटर के नीचे से शराब बेची जा रही है। रात आठ बजे बाद वही बियर की बोतल 150 रुपए तक में बेची जा रही है। फिर भी आबकारी महकमा जानकर अनजान बना हुआ है और लोगों पर दोहरी आर्थिक मार पड़ रही है। दुकानों पर शराब की दर सूची चस्पा नहीं होने और ओवररेट वसूली से पुलिस चौकी, थाना पुलिस से लेकर जिला पुलिस और आबकारी महकमे के अधिकारी भी वाकिफ है। फिर भी जानकर भी अनजान बने हुए हैं।

यह खुलासा जयवर्द्धन द्वारा किए गए स्टींग ऑपरेशन में खुलकर सामने आया। शराब के ठेके भी रसुखदारों के है, जिन्होंने अपने ही परिवार या रिश्तेदारों के नाम पर शराब के ठेके ले रखे हैं। राजसमंद, आमेट, नाथद्वारा व देवगढ़ शहरी क्षेत्र के साथ ही देहात में भी कई ठेके राजनीतिक दलों के नेताओं के है। इसके चलते सेल्समैन शराब की मनमानी कीमत वसूल रहे हैं।

राजसमंद में हाइवे आठ पर पर एक ठेके के अन्दर बैठ कर शराब पीते लोग व इनसेट में रोड पर लगा बोर्ड।

जानिए कहां किस ठेके पर कैसी लूट

हाइवे आठ पर राजनगर से लेकर पसूंद, केलवा, मांडावाड़ा, पड़ासली, गोमती, जनावद, दिवेर, कामलीघाट व भीम तक एक दर्जन से ज्यादा शराब ठेकों का दौरा किया। इसमें सामने आया कि अधिकृत शराब ठेके तो हाइवे से तय दूरी है, मगर उनकी कई अवैध शाखाएं हाइवे किनारे पर ही होटल व ढाबों में चल रही है। देलवाड़ा से भीम तक हाइवे आठ किनारे अधिकांश ढाबो पर शराब बिक रही है। इन ढाबो या कतिपय दुकानों पर शराब की दर अधिकृत ठेकों के मुकाबले काफी ज्यादा वसूली जा रही है।

ठेको पर नमकीन जैसे कई उत्पाद

शराब के ठेको पर नमकीन, चिप्स के अलावा कई तरह के उत्पाद भी बेचे जा रहे हैं। यही नहीं, कुछ ठेको पर अंडे, नमकीन, प्याज तक की व्यवस्था है और कुछ जगह मांसाहार उत्पाद भी तैयार कर दिए जा रहे हैं।

शराब ठेकेदार की ढाबो से सांठगांठ

शहर व ग्रामीण क्षेत्र के होटल-ढाबों पर खुलेआम अवैध तरीके से शराब परोसी जा रही है। लक्ष्यानुरुप शराब बेचने के दबाव में शराब ठेकेदारों ने होटल व ढाबा संचालकों से सांठगांठ कर ली। इस काले कारोबार से पुलिस थानों से लेकर आबकारी अधिकारी तक वाकिफ है, मगर जानबुझ कर अनजान बने हुए हैं। इसके चलते अवैध शराब का कारोबार दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। अधिकाधिक सरकारी शराब बेच ज्यादा से ज्यादा राजस्व अर्जित करने के सरकार के लक्ष्य को पूरा करने के लिए आबकारी विभाग पर खास दबाव है। इसी वजह से आबकारी महकमे के अधिकारी भी ठेकेदार से किसी भी परिस्थिति में ज्यादा से ज्यादा शराब बिक्री का दबाव बनाते हुए अवैध तरीके से बेचने को बढ़ावा दे रहे हैं। शहर-देहात में आसानी से 24 घंटे शराब मिल रही है।

जो शिकायत कर दे, उसे रियायत

शराब ठेको पर तय दर से ज्यादा कीमत वसूलने की अब तक जिन जिन लोगों ने पुलिस या आबकारी महकमे में शिकायत की। उन लोगों को निर्धारित दर में शराब मिलने लग गई, लेकिन अन्य उपभोक्ता अब भी खुलेआम ठगे जा रहे है। उपभोक्ता की शिकायतें भी आबकारी महकमे की फाइलों में ही दबकर रह गई। किशोरनगर राजसमंद के एक उपभोक्ता ने आबकारी विभाग से लेकर जिला कलक्टर तक को शिकायत की। फिर भी कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई और आज भी न तो किसी दुकान पर शराब दर सूची चस्पा हो पाई और न ही शराब पर ओवररेट लेने पर अंकुश लग पाया है।

अफसरों की भूमिका पर उठे सवाल

होटल-ढाबे के साथ ही शहर-देहात के गली मोहल्लों में अवैध तरीके से चौबीस घंटे शराब बिक रही है। फिर भी आबकारी विभाग से लेकर पुलिस थानों द्वारा भी कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। इससे पुलिस कांस्टेबल से लेकर थानेदार और आबकारी निरीक्षक तक की भूमिका पर सवाल खड़े हो गए हैं।

हाइवे पर लिखे है इस तरह के स्लोगन

खुलेआम बोलते : कर दो शिकायत

ढाबे व अवैध ब्रांचों पर शराब की बोतल के तय दर से बढ़ा कर ज्यादा कीमत वसूलने पर कुछ लोग विरोध भी करते हैं, मगर सेल्समैन खुलेआम शराब के शौकीनों को चेतावनी देते हैं कि आप जहां चाहो, शिकायत कर दो। कुछ भी नहीं होने वाला। अगर आपको शराब चाहिए, तो यही कीमत देनी पड़ेगी।

हर ठेके की दर अलग अलग

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के ठेकों पर भी एक ही ब्रांड की शराब की कीमत अलग अलग वसूली की जा रही है। उदयपुर व राजसमंद के सीमावर्ती ठेको पर शराब निर्धारित दर पर ही बिक रही है, मगर जैसे ही उदयपुर से खमनोर, देलवाड़ा व थाना क्षेत्र की ओर आगे बढ़ते हैं, तो हर ठेके पर उसी ब्रांड की शराब की कीमत तय दर से ज्यादा वसूली जा रही है। प्रत्येक बोतल पर 20 से 50 रुपए तकक का अन्तर है।

सूखा दिवस में भी मिलती है शराब

26 जनवरी को सूखा दिवस पर शराब ठेके बंद रहे हैं और शराब बिक्री पर प्रतिबंध होने के बावजूद खुलेआम शराब बिकती है। 26 जनवरी को किए गए दौरे में यह सब कुछ सामने आ गया। आबकारी व पुलिस की मौन स्वीकृति के चलते 15 अगस्त, महावीर जयंती, गांधी जयंती सहित अन्य राष्ट्रीय पर्व, त्यौहार के दिन सूखा दिवस घोषित होने के बाावजूद शटर के नीचे से या होटल, ढाबे व दुकाानों के जरिये शराब बेची जा रही है।

विभागीय कार्रवाई सिर्फ खानापूर्ति

अवैध शराब की रोकथाम को लेकर आबकारी दल व पुलिस थानों द्वारा सिर्फ कागजी खानापूर्ति पूरी की जाती है। अब तक एक भी पुलिस थाने व आबकारी दल ने किसी ब्रांच को बंद नहीं किया और न ही अवैध शराब बेचने वाले होटल- ढाबा संचालकों के खिलाफ कोई कार्रवाई की। इसके चलते उनकी मिलीभगत खुलकर सामने आ गई।

सभी दुकानों पर शराब सूची अनिवार्य हैं। कोई भी तय दर से ज्यादा शुल्क नहीं ले सकता। अगर इस तरह कोई सैल्समेन शराब की बोतल का ज्यादा मूल्य ले रहा हैं तो इसकी जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

रियाजुद्दीन उस्मानी,
जिला आबकारी अधिकारी, राजसमंद

तीखी मिर्ची

बिचारा बेवड़ा

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

कल रात घर आते समय चौराहे पर तीन चार शराबी अपनी मस्ती में फिल्मी धुनों को अपने-अपने अन्दाज में गा रहे थे। उत्सुकतावश मैं रूका तो एक शराबी पास में आकर गाने लगा। ***''मुझे दुनिया वालों शराबी ना समझों, मैं पीता नहीं हूं पिलाई गई है, महंगी शराब का लेबल लगा था, मगर उसमें सस्ती मिलाई गई है...''*** मैंने कहा ये क्या गा रहे हो। उसने कहा मेरा मुंह मत खुलवाओ। हम वो लोग नहीं जो बात बात पर जुबान खोलते हैं। चाहे पेट्रोल की कीमत हो या सब्जी के दाम हो, दो-दो रुपए पर जनता चिल्लाने लगती है। पर हम शराबी कभी किसी बात पर हो हल्ला नहीं करते हैं। हम शराबी क्या हुए चौराहे के ढोल हो गए। हमारी तो हर कोई बजा के चला जाता है। चाहे हमारी महंगी शराब में सस्ती की मिलावट होती है या हमें ज्यादा कीमत पर भी शराब खरीदनी पड़ती है। हमारी बिरादरी आम जनता की तरह हंगामा नहीं करती है। वह शराबी मंजे हुए नेता की तरह अपनी सफाई दे रहा था। मैंने कहा हर तरफ शराबबंदी की चर्चा है। तुम सब शराब छोड़ क्यों नहीं देते। तभी दूसरा शराबी जो फुल टुन्न था आया और आते ही हां..हां.. हंसते हुए बोला- 'शराबबंदी, शराबबंदी तुम क्या समझते हो। यूं शराबबंदी हो जाएगी यहां। हम तो शराबबंदी हो जाए, तो शराब छोड़ने को तैयार है, मगर क्या यहां के राजनेता शराबबंदी होने देंगे, जिनके हर चुनाव में हमीं लोग एक तरफा वोटिंग कर जिताते हैं। मगर हम कभी श्रेय लेने के लिए लड़ते नहीं है। जिस तरह अभी आधार कार्ड का श्रेय लेने देश की बड़ी पार्टियां लड़ रही है।' तभी एक शराबी बोला पिछले चुनाव में रमेश फुल टुन्न होकर वोटिंग बूथ पर गया तो वोटिंग मशीन के आगे जाकर चुपचाप खड़ा हो गया तो चुनाव अधिकारी बोला क्या मशीन नहीं चल रही। तो रमेश ने कहा मशीन तो चालू है, मगर कल जो नेताजी दो बोटल देकर गए। उनका चुनाव चिह्न याद नहीं आ रहा। यह बात सुन कर सभी हंसने लगे। मैंने कहा कितनी बोटलें खाली करते हो। तुम्हारा पेट नहीं भरता तो बोला। हमारा पेट तो आधी बोटल या एक बोटल से भी भर जाएगा, मगर पूछो उन ठेके वालो से जो हमें सवागुनी रेट पर शराब बेचते हैं। हम उनके कारण कंगाल हो गए पर **उनका पेट कब भरेगा?** तभी एक शराबी गाने लगा ***''हमें तो लूट लिया मिल के ठेके वालों ने, बोटल वालों ने, पव्वे वालों ने।।''***

एक संवेदनशील लेखक का अर्थ

जयवर्द्धन अहसास ➤ **लेखक वही, जिस तरह जीता है, जो है, वही लिखता है**

किसी ने ठीक ही कहा है- लेखक समाज का आईना है। लेखक के मायने भी यही है कि जो देखा, तो जीया और फिर खुद पर आजमाते हुए उसके सकारात्मक परिणाम को बताते हुए नई पीढ़ी और समाज को सही दिशा दें। जो जीता है, जो है, वही तो लिखता है। हर कोई व्यक्ति लेख पढ़कर भी उनके जीवन चरित्र की परिकल्पना कर लेता है कि वह कैसा होगा। यही सच है कि जैसे लेख का एक एक शब्द पढ़ते हैं, तो मानो लेखक के जीवन चरित्र का रोम-रोम जान लिया। सच्चे लेखक की तो यही पहचान है। ऐसी दो शख्सियत के बारे में आखर हिन्दी के सम्पादक चन्द्रपाल ने अपना संस्मरण लिखा है, जिसमें हर लेखक स्वयं को परख सकता है।

यह बात उस समय की है, जब मैं मेरे गांव धनायका के पास साथिया नाम के कस्बे में कक्षा आठवीं में पढ़ता था। वहां एक छोटी सी लाइब्रेरी थी। वहां से मुझे साहित्य पढ़ने और समझने की अक्ल आई। उसी लाइब्रेरी में एक दिन कमर मेवाड़ी की पत्रिका सम्बोधन, माधव नागदा जी की कहानियां पढ़ने का मौका मिला। क़मर मेवाडी की पत्रिका सम्बोधन में कई नामचीन लेखक सूरज प्रकाश, सोहन शर्मा, स्वयं प्रकाश, आलम खान आलम को पढ़ा। इन सबने मेरे दिल को अंदर तक मथ दिया। सम्बोधन में खास रूची और बढ़ गई, जब मुझे पता चला कि क़मर मेवाडी मेरे ही पास के शहर कांकरोली से हैं। मिलने की तमन्ना और बढ़ गई। मां से एक दो बार कहा तो मां ने मना कर दिया, बोली- इतना दूर शहर अकेला कैसे जाएगा और किराया भी नहीं है। मेरा सम्बोधन पढ़ना जारी रहा।

जब दसवीं कक्षा में आया, तो मेरे स्कूल के मेधावी छात्र में मेरा चयन हुआ और पंद्रह दिनों के लिए कांकरोली शहर के स्कूल श्री बालकृष्ण विद्या मंदिर भेज दिया गया। स्कूल के खर्चे पर मन खुशी से झूम उठा। क़मर मेवाड़ी जी और माधव नागदा जी से मुलाकात जो होनी थी। पता तलाश करते हुए एक दिन चांदपोल क़मर जी के घर पहुंच ही गया। मुझे हमेशा सम्बोधन के हर अंक में छपी रचनाएं लेखक सहित याद रहती थी।

क़मर मेवाडी का दूसरा नाम 'ऊंचे कद का आदमी'। मेरे जैसे पाठक के लिए क़मर मेवाड़ी कभी गांधी, टैगोर से कम न थे। पहली मुलाकात में एक डर अंदर था। वो मुलाकात कभी नहीं भूल सकता हूं। इतना सरल, मृदुभाषी व्यक्तित्व की मैंने कल्पना नहीं की थी। वो भी सम्बोधन को लेकर मेरे लगाव से खुश थे। मैं एक साहित्य के छात्र की तरह सभी अंकों में छपे लेखकों और उनकी रचनाओं के बारें में बताता चला गया। एक परीक्षार्थी की तरह। उसके उलट कमर जी को मेरी ज्यादा फिक्र थी। कहां रह रहा हूं, क्या खा रहा हूं। खाना-पीना तो ठीक है या नहीं। एक अजनबी से इतना प्यार। उस दिन क़मर मेवाड़ी मुझे बरगद का पेड़ लगे, जिसकी छांव में हम जैसे कई पक्षी आश्रय पाते हैं। फिर मुलाकातों और क़मर मेवाड़ी जी से लगाव का सिलसिला कभी थमा नहीं। बाद में आगे की पढ़ाई के लिए स्थाई रूप से कांकरोली आ गया अपने मित्र हितेश के घर।

12वीं के बाद घर की परिस्थिति की वजह से आगे पढ़ाई नहीं हो पा रही थी। बम्बई (अब मुंबई) जाना तय हुआ। सोचा वहीं पढ़ाई करेगें और काम भी। सम्बोधन में छपे मुबंई के लेखकों में सूरज प्रकाश हमेशा प्रभावित करते रहे थे। उनकी कहानी 'दो जीवन समानांतर' सम्बोधन में ही छपी थी और मेरी प्रिय कहानियों में से एक है। मुबंई जाना है, तो मुलाकात तो करनी ही होगी। मुबंई आया और एक दिन दो रूपये के सिक्के हाथ में लेकर टेलीफोन बूथ से सूरज प्रकाश जी को फोन लगाया। उन्होंने ही फोन उठाया। उनको बताया कि आप को सम्बोधन में पढ़ता रहा हूं, जिस आत्मियता और प्यार से उन्होंने बात की दिल को छू

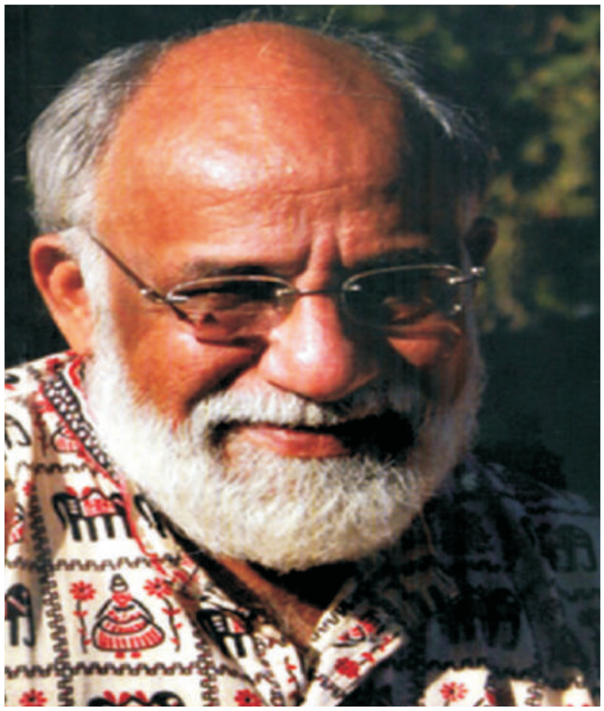

गई। सहर्ष मुझे अपने घर आने का न्यौता दे दिया। सम्बोधन और क़मर मेवाड़ी का नाम आते ही ऐसा लगा कि हम सब एक ही परिवार का हिस्सा है।

अगले ही दिन उनके बताए पते पर पहुंच गया। दरवाजा उन्होंने ही खोला और अपने लाईब्रेरीनुमा कमरे में ले गए, जहां आधुनिक युग की चीजों की जगह चारों ओर किताबें ही किताबें। कितना लगाव किताबों से।

पहली मुलाकात के केंद्र में सम्बोधन, क़मर मेवाडी, विश्व साहित्य, उनकी कहानी 'दो जीवन समानांतर' थी। हेमिंग्वे, टॉलस्टॉय, बर्नाडशाह, चार्ली चैपलिन से लेकर प्रेमचंद, टैगोर तक तमाम लोगों के बारे में चर्चा हुई। वहीं उनकी पत्नी मधुजी और दोनों बेटों से मुलाकात हुई। अपने ही परिवार से मिलने का अहसान हुए था।

यहां भी क़मर जी की तरह सूरज जी को मेरे बारें में ज्यादा चिंता थी। कहां रह रहा हूं, क्या खा रहा हूं। खाना-पीना तो ठीक है या नहीं। उनकी आत्मियता दिल को छू गई। लगा कि लेखक अपने अंदर कितनी संवेदना लेकर जीता है। सूरज जी की महानता देखिए कि इन सबके बीच भी उन्होंने पूछ ही लिया खाना खाया कि नहीं, मुझे मूंगदाल की खिचड़ी बनाना अच्छी तरह आती है और किचन में घुस गए मूंगदाल की खिचड़ी बनाने। मेरी आंखें भर आई। आज भी यह सब लिखते वक्त मेरे हाथ जैसे उनके सम्मान में रूक जाते हैं। सूरज जी ने खिचड़ी खाते खाते एक नौकरी भी ढूंढ दी, सुधा अरोरा जी के वसुंधरा में। वो पुरी तरह मुझे लेकर चिंतित थे। वो सिर्फ अपने लेखन में ही सुंदर और बेहतर दुनिया बनाने की कोशिश नहीं करते, बल्कि उसे शिद्दत से जीते भी है।

आज जब हर रिश्ता दोस्ती स्वार्थ पर टिकी है। क़मर मेवाडी और सूरज प्रकाश जैसे निस्वार्थ, संवेदनशील और एक बेहतर दुनिया का सपना देख रहे लोगों की समाज को सख्त जरूरत है। सूरज प्रकाश और क़मर मेवाड़ी हमारे अंतस में बसते हैं, जहां से वो कभी नहीं निकल सकते हैं। आज जब भी मैं किसी संघर्षरत व्यक्ति को देखता हूं, तो मेरे अंदर बैठे कमर मेवाड़ी और सूरज प्रकाश जाग जाते हैं।

आज के इस संवेदनहीन समय में इन संवदेनशील लोगों की कितनी जरूरत है। मैंने यही लिखने की कोशिश की है। इनके लिखे को पढ़ना, समझना और नेक्स्ट जेनरेशन को फॉरवर्ड करना।

आज का नारा होना चाहिए
जय जवान, जय किसान, जय लेखक।

चन्द्रपाल सिंह, सम्पादक आखर हिन्दी
धनायका (चारभुजा) हाल मुंबई

25% लोग डायबिटीज से ग्रसित, खान-पान को नियंत्रित कर सुधार सकते हैं सेहत

आधुनिक युग में जिस तरह घर- दफ्तर में सुविधा, संसाधन बढ़े, उसी तरह से आमजन की सेहत बिगड़ती जा रही है। अनियंत्रित खानपान, अधिक बैठक की वजह से हर कोई मधुमेह (डायबिटिज) की चपेट में आ गया है। अकेले जिला अस्पताल में प्रतिदिन के आउटडोर में 25 फीसदी लोग मधुमेह से ग्रसित है, जिसमें सर्वाधिक रोगी युवा वर्ग है। खान-पान पर नियंत्रण ही मधुमेह से राहत का बेहतर व आसान उपाय है।

भागदौड़ की जिन्दगी में जॉब की व्यस्तता के चलते किसी को व्यक्तिगत स्वास्थ्य की फिक्र नहीं है और न ही लोग इसके दुष्परिणाम को समझ पा रहे हैं। भागदौड़ व अव्वल रहने की होड़ से बढ़ रहे तनाव और मधुमेह से गुर्दा खराब होने का खतरा हर शख्स में बढ़ गया है। तनाव के कारण कई बीमारियां हो सकती है। यही वजह से आरके जिला अस्पताल प्रतिदिन करीब 500 रोगियों में से डेढ़ सौ लोग मधुमेह से ग्रसित ही पाए जाते हैं। यही स्थिति अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों की भी बनी हुई है।

मधुमेह से हृदयाघात का खतरा

मधुमेह रोगियों में हृदय रोग अपेक्षाकृत कम आयु में होने की आशंका है और हृदयाघात का खतरा है। रजोनिवृत्ति के पूर्व महिलाओं में एस्ट्रोजन हार्मोन के कारण हृदय रोग का खतरा पुरुषों की अपेक्षा कम रहता है, लेकिन मधुमेह ग्रसित महिलाओं में यह सुरक्षा कवच निष्प्रभावी हो जाता है और इनके हृदय रोग का खतरा पुरुषों के समकक्ष हो जाता है।

ये है मधुमेह रोग के लक्षण

✦ ज्यादा भूख लगना ✦ वजन कम होना ✦ दृष्टि में धुंधलापन
✦ मोटापा बढ़ना ✦ प्यास और पेशाब का बढ़ना
✦ थकान होना ✦ तनाव बढ़ना ✦ त्वचा में खुजली होना
✦ घाव भरने में समय लगना ✦ फोड़े- फंसी अधिक होना
✦ पुरुषत्वशक्ति में क्षीणता होना ✦ स्त्री मासिक धर्म विकृति

ये है बचाव के उपाय

✦ नियमित व्यायाम करें ✦ व्यक्तिगत स्वच्छता अपनाए
✦ शर्करीय पदार्थ कम खाए ✦ शारीरिक वजन घटाए
✦ दवा चिकित्सकीय परामर्श से ही खाए
✦ चिंता, तनाव, व्यग्रता से हमेशा मुक्त रहे
✦ तीसरे माह में रक्त शर्करा की जांच कराए
✦ भोजन में रेशे युक्त द्रव्य, तरकारी, जौ, चने, गेहूं, हरी सब्जी व दही का खूब सेवन ✦ नंगे पैर जमीन पर चलना चाहिए

ये आयुर्वेद व घरेलू उपाय

तुलसी के पते : तुलसी के पतों में एंटीआक्सिडंट और जरूरी तेल होते हैं जो इजिनॉल, मेथिल इजिनॉल और कैरियोफैलिन बनता है। ये सारे तत्व मिलकर इन्सुलिन जमा करने वाली और छोड़ने वाली कोशिकाओं को ठीक से काम करने में मदद करते हैं।

दाल चीनी : ये इन्सुलिन की संवेदनशीलता को सुधारने के साथ साथ ब्लड ग्लूकोज लेवल को भी कम करता है।

ग्रीन टी : ग्रीन टी में पॉलीफिनोल्स होते हैं जो एक मज़बूत एंटी.ऑक्सीडेंट और हाइपोग्लाइसेमिक तत्व है। इससे ब्लड शुगर को रिलीज करने में मदद मिलती है।

करेला : करेले में इन्सुलिन पोलिपेपटाइड होता है। ये एक ऐसा बायोकैमिकल तत्व है जो ब्लड शुगर को कम करने में उपयोगी है।

नीम पते : नीम के पते स्वाद में कड़वे होते हैं पर इनमें बहुत सी खासियतें हैं। नीम इन्सुलिन रिसेप्टर सेंसिटिविटी बढ़ाने के साथ साथ शिराओं व धमनियों में रक्त प्रवाह को ठीक करता है।

काला जामुन : ये ब्लड शुगर को कम करने में मदद करता है और हृदय संबंधी बीमारियों से दूर रखता है।

डॉ. प्रकाश शर्मा, BHMS
श्रीजी हॉम्यो क्लिनिक, कांकरोली

शिक्षा हर नागरिक का मूल अधिकार और राज्य का दायित्व भी

भारत का संविधान स्वतंत्र भारत की जनता को एक महत्वपूर्ण उपहार हैं। संविधान के भाग तीन में नागरिकों को अनेक मूल अधिकार प्रदान किए गए हैं। विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उनमें से एक हैं। कर्नाटक राज्य बनाम प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय प्रबन्धक (ए.आई.आर. 2014 एस.सी. 2014) के मामले में उच्चतम न्यायालय ने विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यक्तित्व विकास के लिए अपरिहार्य माना हैं। इसी से जुड़ा हुआ एक अधिकार हैं शिक्षा का अधिकार।

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा आवश्यक हैं। प्राय: सभी अवसरों पर शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया हैं, लेकिन इसे मूल अधिकार का दर्जा नहीं मिल पाया। सर्वप्रथम सन् 1993 में उनीकृष्णन (1993 एस.सी.सी. 645) के मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा शिक्षा के अधिककार को मूल अधिकार के रूप में घोषित किया गया।

परिणास्वरूप संविधान में 83वें संशोधन 2002 द्वारा एक नया अनुच्छेद 21 क जोड़कर यह प्रावधान किया गया कि राज्य ऐसी रीति से जैसा कि विधि बनाकर निर्धारित करें। छ: वर्ष की आयु से चौदह वर्ष की आयु के सभी बालकों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा के लिए उपबंध करें। इसी की पालना में सन् 2001 में बालकों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया गया। इस अधिनियम में नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लिए अनेक उपबंध किए गए हैं।

हमारी न्यायपालिका ने भी समय-समय पर इस अधिकार की पुष्टि की हैं। अनिल पंजाब राव नहाटे बनाम महाराष्ट्र राज्य (ए.आई.आर. 2011 एनओसी 109 बम्बई) के मामले में बम्बई उच्च न्यायालय द्वारा यह कहा गया कि शिक्षा का अधिकार मूल अधिकार हैं। राज्य का यह कर्त्तव्य हैं कि वह सभी स्थानों के बालकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करें। यही दायित्व अभिभावकों का भी हैं। समुचित सरकार एवं स्थानीय प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती हैं कि वह ऐसे स्थानों पर शिक्षण संस्थाएं स्थापित करें, जहां आस-पास में ऐसी शिक्षण संस्थाएं नहीं हो।

ट्राइबल मिशन बनाम केरल राज्य (ए.आई.आर. 2011 एन.ओ.सी. 26 केरल) के मामले में तो केरल उच्च न्यायालय द्वारा यहां तक विनिर्धारित कर दिया गया कि आस-पास में विद्यालय होने के आधार पर किसी नए विद्यालय को मान्यता देने से इन्कार करना शिक्षा के मूल अधिकार अतिलंघन हैं।

भारतीय सेवा समाज ट्रस्ट बनाम योगेश भाई अम्बालाल पटेल (ए.आई.आर. 2012 एस.सी. 3285) के मामले में उच्चतम न्यायालय ने पुन: यह कहा कि शिक्षा का अधिकार एक महत्वपूर्ण मूल अधिकार हैं। प्रारम्भिक एवं बेसिक शिक्षा की व्यवस्था करना सरकार का संवैधानिक दायित्व हैं। शिक्षा का यह अधिकार केवल छ: से चौदह वर्ष की आयु के बालकों तक ही सीमित नहीं हैं। इसे व्यावहारिक बनाने का समय-समय पर हर सम्भव प्रयास किया गया हैं। कुमारी मुहिनी जैन बनाम कर्नाटक राज्य (ए.आई.आर. 1992 एस.सी. 1958) के मामले में एक महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए उच्चतम न्यायालय ने कहा कि राज्य शैक्षणिक संस्थाओं में ऐसी व्यवस्था करें कि कोई भी व्यक्ति मात्र निर्धनता के कारण शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश से वंचित न रह जाए। इस मामले में पीटिश्नर को अत्यधिक शुल्क के कारण मेडिकल कॉलेज में प्रवेश से वंचित रहना पड़ा था।

राष्ट्रीय नैत्रहीन संघ बनाम संघ लोक सेवा आयोग (1993 एस.सी.सी. 411) का एक और ऐतिहासिक मामला हैं, जिसमें उच्चतम न्यायालय द्वारा संघ लोक सेवा आयोग को यह निर्देश दिए गए थे कि यदि कोई नैत्रहीन व्यक्ति भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रवेश पाने का इच्छुक हैं, तो उसे बेललिपि या लेख की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

संविधान के अनुच्छेद 29 में यह कहा गया हैं कि राज्य द्वारा घोषित या राज्य निधि से सहायता पाने वाले किसी शिक्षण संस्था में प्रवेश से किसी भी नागरिक को केवल धर्म, मूलवंश, जाति या भाषा के आधार पर वंचित नहीं किया जाएगा। साथ ही अनुच्छेद 30 में धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गो को अपनी रूचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का मूल अधिकार किया गया हैं। उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हैं कि शिक्षा का अधिकार प्रत्येक नागरिक का एक मूल अधिकार बन गया हैं और राज्य का दायित्व।

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल
उप शासन सचिव राजस्थान एवं
पूर्व न्यायाधीश (लावासरदारगढ़)

जब सुन्दरी पर दिल आया तो कंजूस पाण्डेय जी ने दे दी 40 रुपए की छूट

आज हर तरफ चर्चा है 'आप' की यानि आम आदमी की। पार्टी से लेना देना नहीं, कि कटवारिया सराय के गेंडामल हलवाई ने अपनी स्वर्गीया अम्मा श्रीमती चमेली देवी के नाम पर साहित्य साधना के लिए नकद इक्कीस हजार रूपए, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, शाल और मिठाइयों के टोकरे से नवाज़ा जाएगा। लेखक छोटा हो, नाटा हो, लम्बा हो या मोटा हो, हर बंदा इस फिराक में रहता है, कहीं से कुछ न कुछ मिलता रहे। यदि कुछ मिलता रहेगा तो घर मोहल्ले में धाक बनी रहेगी। नहीं तो आज दो दो कौड़ी के बिकते हैं, कौन पूछता है इन्हें।

लेकिन हमारे दिव्य पुरुष विलायती राम पाण्डेय कभी विलायत नहीं गए थे, उससे क्या फर्क पड़ता है, नहीं गए तो नहीं गए, अगर अन्जाने कोई पूछ बैठा तो उससे भिड़ जाएंगे मानो किसी ने सांड को लाल दुपट्टा दिखा कर खुजला दिया हो। हुआ ऐसा कि उनके पिता सारू मल पाण्डेय पुराने हलवाई थे अंग्रेजों के ज़माने से। दूर दूर से अंग्रेज अपनी मेमों को वहां लाकर मिठाई खिलाया करते थे और अपनी उंगली चाटा करते थे। उन दिनों सारू की पत्नी चमेली देवी पेट से थी, विदेशियों का जमावड़ा दुकान पर रहता था, सारू ने सोचा क्यों न अपने होनहार का नाम विलायती ही रख दूं, नाम रखा गया और विलायती ने बड़े होते ही गल्ला संभाल लिया, पिता की तरह आज्ञाकारी और मिलनसार तो था ही। दुकान सौंपकर सारू तीर्थ यात्रा पर निकल गए बताते हैं। फिर लौट कर नहीं आये सारू।

कहते हैं नसीब वाले होते हैं वे लोग जो लौट कर नहीं आते, कुछ दिन अम्मा रोइ धोई। फिर अपने को समझाती रही, होनी को कौन टाल सकता है, जाने वाला चला गया, वापस आया तो ठीक नहीं आया तो उसका भला, चमेली देवी खूब खाती, और एक दिन चमेली देवी ने भी प्राण त्याग दिए।

पूरे इलाके में नंबर वन की दुकान थी उसके होनहार विलायती की। अम्मा यह जरूर कहती थी कल मैं रहूँ ना रहूँ बेटा विलायती तुम शादी करा लेते, मैं भी पोते पोतियाँ खिला लेती। पता नहीं क्या दुश्मनी थी विलायती को। शादी के नाम से दूर भागता था। यह भागना भी क्या चीज है, एक भागा था मिल्खा और एक हमारा विलायती।

दुकान खूब चलती थी, कहते है न एक दिन सभी का आता है, आखिर वह दिन आ ही गया। दुकान पर एक लावण्या अपूर्व सुंदरी मानों सीधे परीलोक से आई हो।

दुकान पर विलायती था, आज भीड़ कम थी, अक्सर दोपहर का समय सुस्ताने का होता है ग्राहकों का भी और दुकानदारों का भी। पर बला की खूबसूरत सुंदरी ने आते ही कहा कि मैं बाहर से आई हूँ, आप की दुकान का बहुत नाम सुना है, क्या आप के पास चमचम है और कलाकंद। जी दुकान पर सब चीजें है बताइये कितनी तौल दूँ, जी सब एक एक किलो। मिठाई पेक हो गई पर पाण्डेय की ध्यान हटने का नाम ही नहीं ले रहा था। सुनिए कितने पैसे हुए जी, पांच सौ चालीस, आप ऐसा करे पांच सौ ही दे दीजिये। आप पहली बार आई है बाहर से, इतनी छूट तो मिलनी चाहिए। सुंदरी ने पैसे दिए और चली गई।

दुकान का छोटू चुपचाप देख रहा था कि मालिक को क्या हुआ कि कंजूस लाला ने चालीस रूपए छोड़ दिए। बात इश्क की थी या घाटे की अपन को क्या। लाला जी खुद जाने।

सुंदरी के बारे में पता किया कि यह कहाँ रहती है क्या करती है। बात सामने आई उक्त सुंदरी एक अखबार में काम करती है, लिखती है, कुछ कहानियां भी लिखी है, प्रेम उसका विषय है, विषय पर गहरी पकड़ है, अरे पकड़ तो मेरे उस्ताद की भी गहरी है मियाँ जलेबी बनाते हुए क्या गोल गोल घुमाते है कि देखने वाले मुंह ताकते रह जाते है और कहते है कि यह जलेबी हमारी हुई, बस इसे पेक कर दो।

बहरहाल हलवाई विलायती राम पाण्डेय ने यह बात गाँठ में बाँध ली थी कि अम्मा के नाम पर साहित्य साधना के लिए चमेली देवी पुरुस्कार के लिए वही सुंदरी को तय किया जाए। इसके लिए इलाके के खैराती लाल खुराना स्थानीय अवकाश मास्टरजी और तीन उनके सहयोगियों के साथ मिलकर निर्णय गया कि जलवा टाइम्स की रिपोर्टर सुश्री मिश्री सपोलिया को

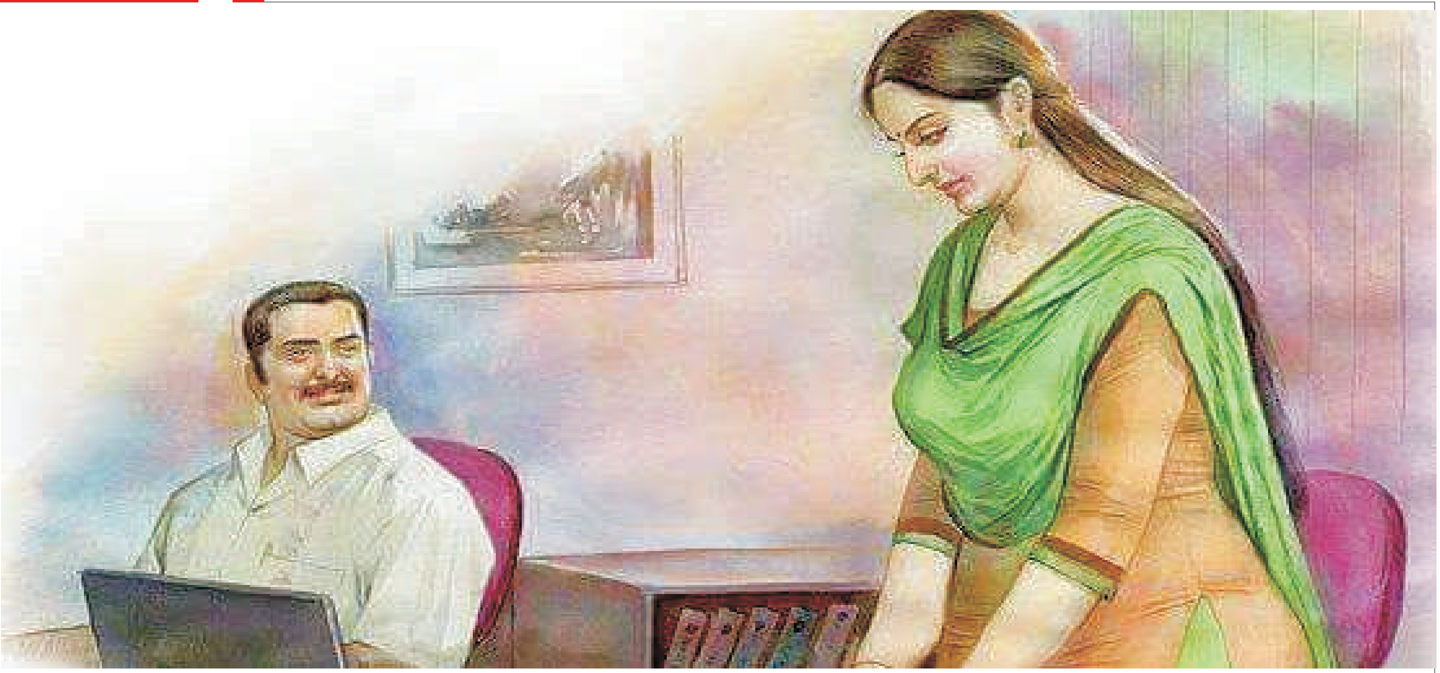

वर्ष 2014 के लिए चमेली देवी साहित्य साधक पुरूस्कार से नवाजा जाएगा। ऐसी विज्ञप्ति सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हो गई। खुद मिश्री को भी नहीं मालूम था कि उसे पुरूस्कार समिति ने चुना है। शाम को वह खुद विलायती राम पाण्डेय की दुकान पर आई और उन्हें धन्यवाद किया। पाण्डेय जी आपने मुझे इस योग्य समझा और पाण्डेय जी लगे देखने सपने।

खैर, नियत दिन समारोह में सम्मान दिया गया, पाण्डेय जी का समाचार जलवा टाइम्स में फोटो सहित प्रकाशित किया गया। इलाके में पाण्डेय जी नाम सम्मान से लिया जाने लगा। अब तो इलाके में पाण्डेय जी के नाम की धूम थी। पर विलायती राम का मन तो अटका हुआ था जलवा टाइम्स की रिपोर्टर में।

किसी मध्यस्थ की मदद से एक बार शाम को बैठक तय हुई। विलायती राम पाण्डेय और मिश्री। शाम का वक्त, रेस्टोरेंट में बजता हल्का मीठा संगीत किसी को भी पगला देने के लिए पर्याप्त था। मिश्री अनुभवी थी, कुछ कुछ समझ रही थी, आखिर इस विकसित होते देश की पत्रकार और ऊपर से अब चमेली देवी साहित्य साधना का पुरूस्कार प्राप्त लेखिका थी, समझ गई थी पाण्डेय जी में उमड़ धुमड़ रहे बादलों की परिभाषा को। मिश्री ने कह ही दिया, विलायती जी मैं आपका बहुत सम्मान करती हूँ, आप के मन में जो कुछ है, तनिक भी संकोच न कीजिए, बल्कि कह दीजिये। इतना सुनना था कि एक बार तो पाण्डेय भी भौंचक्के रह गए। फिर धीमे से साहस जुटा कर बोले– आप हमें बहुत अच्छी लगती है, क्या आप हम से ब्याह रचाना चाहेंगी, हम अपने परिवार में इकलौते है, कोई भाई नहीं, माँ तो बहुत पहले ही गुजर चुकी थी, पिता जी ने छुटपन में ही घर त्याग दिया था। फिर बोले कि आप बुरा मत मानिएगा। जब से देखा है, आप को लगा कि आप हमारे लिए ही बनाई गई हो उस प्रभु की किरपा से। आप कछु बोलिए ना। पहली बार किसी ने इतने प्यार से अपने मन की बात को व्यक्त किया था। वरना इस संसार में बहरूपिये तो बहुत है। मिस्री ने फौरन हाँ कह दी। अब तो पाण्डेय इत्ते खुश हुए की उनकी खुशी में बरसा रानी भी अपनी खुशी का इजहार किये बिना मानी नहीं। जम कर बारिश हुई।

आखिर सम्मान काम आ ही गया। मिश्री अब मिसेज विलायती पाण्डेय बन गई थी। नौकरी से त्यागपत्र दे दिया गया। मिश्री ने प्लान कर लिया था कि अब आगे से यह सम्मान अखिल भारतीय स्तर पर जाएगा। शादी हो जाने पर हनीमून के लिए यह जोड़ा कश्मीर रवाना हो गया। दुकान का मुंडू सोच रहा था कि पाण्डेय जी को यह मन्त्र हाथ लगा की चट सम्मान ते पट शादी।

डॉ. लालित्य ललित
बी 3, 43 ए शकुंतला भवन,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली 110063

धर्मतंत्र और राजतंत्र की समन्वित सोच से राजनगर-कांकरोली का संयुक्त विकास

राजनगर-कांकरोली की सरहद सलूस रोड मार्ग पास झील पेटे में बना पेयजल प्रोजेक्ट का मनोहारी नजारा

किसी भी शहर को उसके ऐतिहासिक विकास की प्रकृति के अनुसार चिह्नित किया जाना चाहिए। इससे विकास को क्षैतिज (HORIZONTAL) और ऊर्ध्वाधर (VERTICAL) मानदंडों पर समझने का एक रोचक अवसर मिलता हैं। राजसमन्द जो मूलत: अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कलेवर में दो उपनगरों कांकरोली और राजनगर के फ्यूजन से विकसित व्यापक रूप से इस सदी की परिकल्पना हैं, को बिना इन दो बस्तियों के महत्व को स्वीकार किए साकार करना चाहें, तो वह प्रशासनिक एकीकरण के प्रयासों के बल पर नहीं हो सकेगा। हां दोनों उपनगरों को अनेक प्रसंगों में एकता का कोई एक परिधान पहनाने का सफल प्रयास कर सकती हैं, तो वह राजसन्द झील।

इसीलिए वर्तमान राजसमन्द नगर का कोई भी मॉडल बिना कांकरोली व राजनगर की धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक पृष्ठभूमि को समक्ष रखे बिना नहीं आकार ले सकता हैं। धार्मिक एवं राजनीतिक तंत्र से नगर प्रशासनिक तंत्र की बुनियाद तैयार करने वाली इतिहास दृष्टि सुधी पाठों के लिए रोचक अध्ययन का विषय हो सकता हैं। राजसमन्द में वर्तमान में नगरीय ढांचे की बुनावट में ठिकाना (कांकरोली) और खालसा (राजनगर) के महीन सूत्रों ने जो रचना शिल्प हमारे समक्ष रखा हैं। उसकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया जाना इसलिए संभव नहीं हैं, क्योंकि वहां पुष्प में सुगन्ध जैसा यौगिक या समवाय संबंध हैं। इसे केवल महसूस किया जा सकता हैं।

उन पर दो प्रकार के समन्वय या फ्यूजन से एक वृहद नगरीय आकार के जन्म लेने की गौरवमय स्थिति का जिक्र किया गया हैं। एक और धर्म व राज तंत्र के फ्यूजन से एक शहर के बनने, विकसित होने की बात हैं और दूसरी ओर दो प्रकार के प्रशासनिक तंत्र जिनमें एक धर्म तंत्र जिसका शासन प्रशासन से दूर-दूर तक कोई लेने देने का सामान्यत: वास्ता नहीं होता। के सत्ता शासन के साथ फ्यूजन की चर्चा की गई हैं। यह उदयपुर राजवंश का ही दूरगामी और प्रगतिशील सोच था, जिसके रहते उस केन्द्रित व्यवस्था में से विकेन्द्रित व्यवस्थाओं के नवाचार शोधे गए। यह मेवाड़ राजवंश का अपने गुरू घर पुष्टिमार्गीय आचार्यो के प्रति अगाध श्रद्धा का परिणाम ही था कि उन्हें मेवाड़ के एक व्यापक भू भाग कांकरोली ठिकाने के व्यापक अधिकारों से नवाजा गया।

लेकिन एक ओर त्रिआयामी समंजन या फ्यूजन नाथद्वारा, कांकरोली नगरों के डीएनए टेस्ट से संकेतित होता हैं। वह पुष्टिमार्गीय प्रधान, द्वितीय व तृतीय पीठों की उत्सव दक्षिण भारतीय तैलंग परंपरा का ब्रज और मेवाड़ की उत्तर भारतीय संस्कृति के साथ दूध में शक्कर के घुल जाने वाली गहन खान-पान, वेशभूषा, जीवन शैली, स्थापत्य व वास्तु सहित आचार व्यवहार, रीति रिवाजों की

विविधरूपा सभ्यताओं का संगम। यह एक पृथक विवेचन का विषय हैं। जिसका समाज शासकीय अध्ययन होना चाहिए।

इसलिए राजसमन्द पाठकों विशेषकर यहां की नई पीढ़ी के लिए पांरपरिक गौरव के अन्यत्म उदाहरण के रूप में अनुभूत करने, समझने का अनुठा विषय हैं। धार्मिक शासन भी किसी नगर के विकास की परिकल्पना को आकार देने में सहायक हो सकता हैं, यह कांकरोली राजनगर के इतिहास की मौलिक व्याख्या हैं दाक्षिणात्य वैष्णव आचार्य परम्परा के शुद्धद्वैत दर्शन के आदि संस्थापक वल्लभाचार्य के युग विट्ठलनाथजी द्वारा इस वैष्णव परम्परा के प्रधान आराध्य श्रीनाथजी के बाद मेवा़ की राजन्य उदयपुर रियासत के साथ गुरू परम्परा में जिस पीठ का महत्वपूर्ण स्थान हैं वह कांकरोली की तृतीय पीठ श्री वल्लभाचार्य के युग गुंसाई विट्ठलनाथजी के तृतीय युग श्री बालकृष्णजी द्वारा विकसित पुष्टि सेवा परम्परा का घर कहलाता हैं।

यह संयोग ही था कि इस परम्परा के तृतीय तिलकायत श्री गिरिधरजी जब गोकुल में प्रभु द्वारकाधीश की सेवा में अनुरक्त थे, उस समय (वि.सं. १७०४ से १७०८ के मध्य) में तत्कालीन उदयपुर महाराणा श्री जगतसिंह गोकुल यात्रा के लिए आए थे। यहां व गिरिधरजी के वैष्णव भावना, आध्यात्मिक चिन्तन व ऋतुअनुकूल प्रभु सेवा सहित उनके अगाध्य पांडिल से प्रभावित हुए और इनसे गुरु परम्परा में दीक्षित हो स्वयं को उदयपुर की रियासत परम्परा के प्रतिनिध रूप में शिष्यत्व भी प्रदान किया। आसोटिया ग्राम गुरुचरण में भेंटकर आचार्य को किसी भी परिस्थिति में मेवाड़ पधारने का निमंत्रण दिया।

मेवाड़ राज घराने का श्री द्वारकाधीश और तृतीय पीठ परम्परा के आचार्यो से शिष्य गुरु सम्बन्धों के माध्यम से उस बन रहे इतिहास के निधामक होने का यह प्रसंग न केवल कांकरोली बल्कि नाथद्वारा जैसे संस्कृति केन्द्रों की स्थापना की प्रस्तावना लेखन का ऐतिहासिक क्षण कहा जा सकता हैं। आंध्र को दार्शनिक चिन्त और ब्रज की लीलाओं वाली परम्परा को अरावली की उपत्यकाओं के मध्य सुरक्षित संरक्षित रखने के हम कांकरोली निवासी नियामक बने यह हमारे लिए नित्य प्रतिपल स्मरण किये जाना विषय रहना चाहिए। और कृतज्ञता के लिए महाराणा जगतसिंह व गोस्वामी गिरिधरलालजी को भी विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए।

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग
कांकरोली, जिला राजसमंद

कांकरोली रौ जाँबाज शहीद 'नारायण सनाढ्य'

आजादी रै पैलां जीने मौत कर्यौ आजाद। नाम जणिरौ नारायण हो, सबने रेलां याद।।

कांकरोली री उजल इतिहासां री धरा जिण पै कई सूरमा, संत अर सतियां रौ जनम वियौ हैं। आ मेवाड़ भौम री आण-बान अर सान री ठौड़ सदियां सूं पूजी जावे हैं। जठे सक्ति, भक्ति अर मानवी मिनख अवतरे वां जगां तो देवत-रमत रौ आंगणों वाजै। अठे कई जाति वरण सम्प्रदाय रा लोग बसै अर आडावल री गोद, तालेड़ी, गोमती जस्सी नद्या राय सागर री झील, देवी-देवता अर भगवान रा ढेरों मन्दर हैं वठे वीर पुरस अर वीरांगणां नारीयां ई जनम ले र टेम-टेम पै आवै, इमें कई सक-सुबो नी हैं।
पुष्टि मारग रा मन्दर प्रभु श्री द्वारका नाथजी रै लारां ब्रज सूं चार जात रा लोग, पूजारी, सेवक अर गौ माता अठे आयर बसग्या। वणी रै पछै आ धरा ही वणां री जनम भौम नामी हैं। अठे मारवाड़ सूं पालीवाल, जैनी आय वस्या। अर पूरबिया भी बस्या। छोटी-मोटी जात रा हेंग लोग रेता हा। अठे कतरीदाण मराठा, होल्कर, मीर नागा साधुवां रा हमला ई विया। पुराणा मोहल्ला, गल्यां रा नाम सूं म्हनै ठा पड़े के अठे रावत, कीर, चुड़ीगर भी वस्या। बोरा मुसलमान रंगरेज ई आज रे रिया हैं। यां सगला रै लारा ब्रजवासी के अलावा गुजर, जाट, गोरवा, अर सनोदिया बामण, ठाकुरजी रा सेवक साढ़े तीन सौ बरस पैलां सूं अठे रे रिया हैं। यादव भी ब्रजभासा रौ रेणी-सेणी ने अठे प्रसारित प्रचारित करी। आजादी री दूसरी लड़ाई रौ असर अठा रा मिनका पै ई खून पड्यौ। सबसूं ज्यादा सुतंतरता सैनाणी नाथद्वारा अर कांकरोली में विया। भीम देवगढ़ रौ नाम भी ठावो हैं।

कांकरोली में शंकरदेव भारती, विचित्र कवि श्याम वर्मा, राम बाबूजी अर आनंदीलाल वर्मा और राजनगर रा काका करनावट अेक नाम, जणिनै लोग ज्यादा नी जाणे वो नाम हैं नारायण सनाढ्य। नारायण रौ नाम जो गुलाब री न्यान फूल्यो अर

सुगन्धी गंध देर भात री आजारी रै पैलां ई वरौ गीयो।

कांकरोली में लगभग सौ बरस पैलां सनाढ्य बामणां रै समाज धोरा मोहल्ला निवासी कज्जूसिंघ पांडे श्री गोस्वामी महाराज बालकृष्णजी उपाधि देयर कज्जूसिंघ बणाय दिया। अणा ही कज्जूसिंघ जी रा घर में सन 1900 ई. माँ ही पन्नीबाई री कोख सूं नारायण रौ जनम वियो हो। कज्जूसिंह वीं दाण खर भंडार रा भंडारी हा। नारायण रौ बालपण दूध-दही, प्रसाद जस्या पुष्टि काकर तत्वां सूं मजबूत हो। ई रे अलावा वो अखाड़ा पै जायर कुस्ती कसरत करतो अर मेहनत रौ काम भी कर तो। ये आपणे बापू री पेली सन्तान हा। अणां रा छोटा भाई रघुनाथ, नंदकिशोर, हरिवल्लभ अर राधा वल्लभ हा। उण री दो बेना गंगाबाई अर लछमा बाई ही। आज ये छोटा भाई बेन सबई राम सरण हुई चुक्या हैं।

नारायण बालपण सुं ई राष्ट्रीय विचार रौ टाबर हो। ई डर सूं अणांरा बापू अणां रौ कम ऊपर में ई ब्याव करी दी दो। गणेशी बाई नाम री घरवाली सूं तीन टाबर्‌या रौ जनम वियो। अमर अमर अर सुझाव रे कारण नारायण रै दिल अर दिमाग में अंगरेजा रै प्रति घृणा रो भाव पैदा हुईग्यो अर वे देस ने आजाद करावा री धुन मन में पाल बैठ्या। सरदार भगतसिंह सूं वणां परिचय कर्‌यौ अर अेक दन वणा नै आपणे घरां कांकरोली लेयर आया। माँ रै हाथ री मक्की री रोटी अर बोर मोगरी रौ साग सूं वण रौ सुवागत कर्‌यो। दूसरे दन अंधारो रेतां भगतसिंह ने गुपचुप रूसत कर्‌या। नाथद्वारा रा बुजुर्ग स्वतंत्रता सैनाणी नरेन्द्रपाल चौधरी रे साथे नारायण घर सूं अेक दनां निकल पड्‌या। चौधरी रे लार सीधा साबरमती गांधीजी रा आश्रम पौच्या। साबरमती आश्रम में अणां नै जल सेवा भार सौप्यो पण थोड़ा समे पछे बीमार हेवारी वजे सूं कांकरोली लोट आया। थोड़ाक दन ये शंकर देव भारती रै लांरा बाजार में आमली रै मेरे-कोरे अेक स्कूल चलायो पण अणां रै मन में देस री आजादी री अलख जागी री ही जो ओ काम छोड़े र जवान साथ्यां रै साथे कांकरोली सूं दूर भीलवाड़ा, उदैपुर, बासंवाड़ा, बिजोलिया अर कुंभलगढ़ आदि गुंपत जांग पै आप रौ अड्‌डो बणायर अलख जगावा रौ काम करबा लागा। अंगरेज फौज अणां ने पकड़र कई दनां जेल में बंद कर दीदा। विजयसिंघ पथिक (भोपसिंघ गुजर) के साथे कुंभलगढ़ जेल में सजा भोगी। पौंतालीस बरस री ऊपर में देस री आजादी खातर जेल री यात्रा वां करी। ई दोरान वणां री घर गिरस्थी चौपट हुई गी। सन् 1945 ई. में असाध्य रोग वंण ने दबोच लीदा। कई ईलाज कराया पण, वणां नै नी बचाय सक्या अर उणा री आंख्या में आजादी सपनों यूं रौ यूं सज्यो रो सज्यो रेईग्यो। नारायण जस्यां नो जवान हस्ती रै अनाम जावा सूं कवि री हेलेणां याद आयगी, जो कुरबानी री कैणी ने जुग-जुग तक जोड़ी री हैं।

अठे आवाज मति करौ रे दुनियां वालो
अमर जवान अठे नींदा में सोया हैं।
जी माटी बलिदान दिया, चूमो वीने
वां पोधा नै पूजो, जाने वां बोया हैं।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
साहित्यकार व कवि, कांकरोली

कविता

गुरू का सम्मान

जहां गुरू का स मान होगा। वो देश सदा महान होगा।।
कच्ची माटी को अपने हूनर से गुरू मुर्तरूप दे जाते हैं।
ऐसे गुरूवर आज समाज में
हमारे यहां इतनी इज्जत क्यों नहीं पाते हैं।
दुनिया में कुछ राष्ट्र गुरू प्रतिभा पर सदा न्यौछावर होते हैं।
इसीलिए ऐसे राष्ट्र दुनिया में विशिष्ट पहचान के होते हैं।।
गुरू के मूल कृत्य शिक्षण से
आज शासन ने शिक्षकों को भटकाया हैं।
इसलिए रिजल्ट छात्रों का इतना सुधर नहीं पाया है।।
शिक्षण है, जो मूल काम भला अन्य काम क्यों इन्हें सौंपे जाते हैं।
राष्ट्र निर्माण के नेक काम में वो
तब चाह कर भी समय नहीं दे पाते हैं।।
सद् शिक्षा से ही किसी राष्ट्र का बेहतर विकास होता हैं।
शिक्षक की दी शिक्षा से ही नवयुग का प्रादुरभाव होता हैं।।
विकसित, उन्नत, राष्ट्र का निर्माण सद् शिक्षा से ही हो पाता हैं।
राष्ट्र को शिक्षित करने का ये बीड़ा सदा शिक्षक ही निभाता हैं।।
शिक्षक के कंधों पर सदा शिक्षण का ही भार होना चाहिए।
राष्ट्र निर्माता इस वर्ग को अन्य कामों में न ढ़ोना चाहिए।।
नाजुक फूलों में लगे कांटों को शिक्षक ही हटाता हैं।
सजे संवरे फूलों में लगे कांटों की खुश्बू से वो राष्ट्र को महकाता हैं।।
कच्ची माटी को ढ़ालकर आकार गुरू ही देते हैं।
सभ्य शिक्षित मानव बना वो समाज को अनमोल तोहफा देते हैं।
वर्षो पहले गुणी गुरूओं खातिर ही
भारत विश्व में अलग से पहचाना जाता था।
शिक्षित ऐसे महापुरूषों खातिर ही तब
भारत विश्व से मान पाता था।।
तब मिलता था जो सम्मान गुरू को
वो आज क्यों नहीं मिल पाता हैं।
इसीलिए भारत की धरा पर
अच्छा फूल अब कम ही खिल पाता हैं।।
अपने राष्ट्र में शिक्षक को और ज्यादा सम्मान मिलना चाहिए।
नेकी के इन पथ प्रदशकों पर सदा राष्ट्र को गौरव होना चाहिए।।
राष्ट्र निर्माता इस कौम का आओ हम सम्मान करें।
सदा रखें दिल में आदर इन पर, जन जन इन पर अभिमान करें।

सुखदेवसिंह आशिया,
रचनाकार राजसमंद

काछबली-मंडावर के बाद दर्जनभर पंचायतों में शराबबंदी की अलख

प्रेरक पहल राज्यावास, थानेटा, पीपलीनगर, बरजाल व बरार के लोगों ने भरी हुंकार

राजसमंद. मगरा क्षेत्र की काछबली के बाद अब मंडावर ग्राम पंचायत भी शराब मुक्त हो गई। इसके साथ ही राज्यावास, थानेटा, पीपलीनगर, बरजाल व बरार ग्राम पंचायत ने भी फिर से शराबबंदी की मुहिम छेड़ दी है। इस बार काछबली व मंडावर पंचायत में चले अभियान की तर्ज कार्ययोजना तैयार कर अभी से जनसंपर्क शुरू कर दिया है। इसके तहत राज्यावास व पीपलीनगर पंचायत मे लोगों ने कलक्टर पीसी बेरवाल को ज्ञापन सौंप दिया है, जबकि अन्य पंचायतों में महिलाओं के साथ ही अब पुरुष भी साथ देने लगे हैं।

मंडावर में 61.23 फीसदी मतदान

शराबबंदी के तहत मंडावर पंचायत में हुए मतदान के तहत 51 फीसदी के मुकाबले 61.23 प्रतिशत वोटिंग हुई। इसके साथ ही मंडावर में सरकारी शराब ठेका बंद हो गई। सरपंच प्यारीदेवी रावत ने कहा कि शराब की लत से हर परिवार त्रस्त है। इसी वजह से महिलाओं ने एकजुटता दिखाई और शराबबंदी की मुहिम को सफलता मिली।

30 जोड़ों ने जीवनभर के लिए थामे हाथ

नवाचार उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी की पहल पर सामूहिक विवाह सम्मेलन

राजसमंद. सर्वसमाज सामूहिक विवाह कन्यादान महोत्सव में ठाकुरजी और तुलसी विवाह सहित 30 जोड़ों ने अग्नि के समक्ष फेरे लेकर एक-दूसरे के हमराह बने। गायत्री परिवार की ओर वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियां लगाई। राजनगर के फव्वारा चौक से बालकृष्ण स्टेडियम विवाह स्थल तीन किमी लंबे मार्ग तक जन सैलाब उमड़ा। शालीग्राम जी की कुमावत समाज कांकरोली की ओर से बारात निकाली गई। वहीं तुलसीजी बालाजी मित्र मंडल की ओर से विवाह करवाया गया। इसके साथ ही 30 दूल्हा-दुल्हन की भी बिंदोली निकाली गई। बिंदोली फव्वारा चौक से शुरू होकर हुसैनी चौक, राजनगर थाना, दाणी चबूतरा होते हुए विवाह स्थल बालकृष्ण स्टेडियम पहुंची। जहां उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, कार्यक्रम संयोजक महेंद्र कोठारी के साथ सभी समिति सदस्यों ने अगुवानी करके ठाकुरजी शालीग्राम के विग्रह की पूजा कर स्वागत किया। विवाह के बाद में 30 वैवाहिक जोड़े के कन्यादान सामग्री के विभिन्न संस्थान और भामाशाहों की ओर से विभिन्न सामग्री भेंट की गई। लोगों ने अपनी श्रद्धानुसार कन्याओं को उपहार दिए। सामूहिक विवाह

समारोह में वैवाहिक जोड़े के सगे संबंधी पेरावणी को लेकर पंहुचे, जहां विवाह की सभी रस्मों को निभाया गया।

आठ किलो का ट्यूमर निकाल युवती को नई जिन्दगी देने वाली डॉ. दर्शना अब राजसमंद में

राजसमंद. आशीर्वाद हॉस्पिटल की डॉ. दर्शना व्यास सिंगला जिन्होंने पूर्व में श्री सांई अस्पताल सादड़ी में कार्यरत रहने के दौरान करीब आठ किलो वजनी ट्यूमर निकाल कर एक युवती की जान बचाई। सादड़ी श्री सांई हॉस्पिटल में एक युवती के अंडाशय ग्रंथी में नासुर बना आठ किलो वजन का ट्यूमर को डॉ.दर्शना व्यास सिंगला के नेतृत्व में पांच घंटे चले ऑपरेशन के बाद सफलता पूर्वक निकाल दिया गया। युवती के परिजनों से डॉ.दर्शना व्यास सिंगला के प्रयास पर आभार व्यक्त किया। निकटवर्ती करणवा गांव की 20 वर्षीय युवती संतोष पुत्री मुलाराम जिसके अंडाशय में व्याप्त ट्यूमर जो नासुर बन गया था। जिससे युवती व उसके परिजन काफी परेशान थे। निश्चेतना विशेषज्ञ डॉ. मोहन परमार के सहयोग से प्रसुति विशेषज्ञ डॉ. दर्शना व्यास सिंगला ने युवती के अंडाशय में व्याप्त ट्यूमर को लेपटोटॉमी व सिस्टेक्टामी ऑपरेशन द्वारा बाहर निकाल उसे सकुशल बचा लिया। उल्लेखनीय हैं कि वहीं डॉ. दर्शना व्यास सिंगला ने अपने स्वयं का हॉस्पिटल अब राजसमंद में 50 फीट रोड पर आशीर्वाद हॉस्पिटल के नाम से स्थापित किया हैं। अनुभवी स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ का राजसमन्द की जनता को लाभ होगा।

बिजली उत्पादन में सौर ऊर्जा का तहलका

राजसमंद. सौर ऊर्जा प्रकृति का दिया अनुपम उपहार हैं। आज के वैज्ञानिक युग में सौर ऊर्जा से बिजली का उत्पादन बहुत सस्ता एवं सुगम हैं। सरकार द्वारा सौर ऊर्जा को प्रोत्साहन दिए जाने से यह हर आम आदमी पहुंच तक सुगम एवं सरल हो गया हैं। आज से पांच वर्ष पूर्व सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन करना बहुत महंगा था। आज के परिपेक्ष्य में सौर ऊर्जा से चलित कृषि आधारित उपकरण जैसे सोलर वाटर पम्प, लाईटिंग आदि पर अनुदान भी दिया जाता हैं। मकान, धर्मशाला, स्कूल, हॉस्पिटल, रजिस्टर्ड ट्रस्ट, धार्मिक स्थल पर अनुदान केंद्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा दिया जाता हैं। सौर ऊर्जा से औद्योगिक ईकाइयां (मार्बल व्यवसाय) एवं घरेलू उपयोग बेहद आसान होने से बिजली बिल में काफी हद तक राहत मिल रही हैं। कृषि क्षेत्र में एक एचपी से 15 एचपी तक सौर ऊर्जा से सिंचाई आठ से दस घंटे प्रतिदिन की जा सकती हैं। ईलेक्ट्रीक बिजली की कटौती से निजात एवं महंगे डिमांड राशि व मासिक बिजली बिल से मुक्ति मिलती हैं। जहां तक बिजली की लाइन नहीं हैं वहां भी सौर ऊर्जा से बिजली मिल सकती हैं। प्रति दो माह के मासिक उपभोग पर प्रति यूनिट अनुमानित 7 रुपए प्रति यूनिट भुगतान करना पड़ता हैं। जबकि सौर ऊर्जा से दो से ढ़ाई रुपए प्रति यूनिट खर्च आता हैं। सुकेम एवं युटीएल कम्पनी भारत की प्रमुख निर्यातक कम्पनियां हैं। युटीएल विश्व में अपनी अच्छी पहचान बनाते हुए भारत के सभी राज्यों में अपने वितरक नियुक्त कर रखे हैं। जिसमें राजसमंद जिला भी विशेष स्थान रखता हैं। ग्राहकों के विश्वास एवं २५ वर्ष की वारंटी के साथ अपने सौर पेनल का वितरक सोलर सिस्ट स इंटरप्राईजेज को नियुक्त किया हैं जो जिला मुख्यालय राजसमंद की जनता को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा हैं। सोलर सिस्टम्स के मुख्य प्रबंधक नारायणसिहं चुंडावत जो पिछले दो वर्षो से जनता व किसानों को लाभान्वित कर रहे हैं। पहाड़ी एवं दुर्गम स्थान जहां बिजली के पोल भी लगाना संभव न हो वहां सोलर सिस्टम्स इंटरप्राईजेज द्वारा सौर ऊर्जा से स्ट्रीट लाईट से प्रकाश की व्यवस्था की। सौर ऊर्जा के कृषि पम्प को मोबाइल के द्वारा चालू व बंद भी किया जा सकता हैं। जिससे किसानों को कड़कती सर्दी में रात को सिंचाई करने से राहत मिलती हैं। सोलर सिस्टम्स इंटरप्राईजेज राजसमंद खुशबू मार्केट में टीवीएस चौराहा पर स्थित हैं।

खस्ताहाल सड़कों से आमजन परेशान

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

रेलमगरा उपखण्ड मुख्यालय पर खंडेल से दरीबा फतहनगर एवं कांकरोली से कपासन की खस्ताहाल सड़कों से वाहन चालकों के साथ आमजन भी दुर्घटना का शिकार बन रहे हैं। खंडेल से रेलमगरा- दरीबा व फतहनगर मार्ग पर सार्वजनिक निर्माण विभाग की ओर से मेगा सड़क का निर्माण में घटिया सामग्री का उपयोग करने से जगह जगह से सड़क उधड़ गई है।

ऊबड़ खाबड़ पक्की सड़क पर चलना आम वाहन चालकों के लिए खतरनाक बन गया है। इस पर क्षेत्रीय लोगों से लेकर व्यापार मंडल द्वारा भी प्रधान, विधायक, मंत्री तक को शिकायत कर दी। फिर भी न तो सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा ध्यान दिया गया है और न ही प्रशासन गंभीर है। इसका खमियाजा इस मार्ग से गुजरने वाले वाहन चालकों को भुगतना पड़ रहा है।

बंद रहे रेलमगरा के बाजार

तत्कालीन रेलमगरा उपखंड अधिकारी तरू सुराणा ने कलक्टर के आश्वासन पर बाजार खुलवाए व दूसरे दिन कस्बे के मुख्य मार्ग दरीबा की तरफ पेचवर्क किया, लेकिन पानी निकासी के अभाव में कुछ समय पर वापस वहीं स्थिति बन गई। जहां सीमेन्टेड (सीसी) सड़क है, वह टूट जाने से आए दिन दुर्घटनाएं हो रही है। जगह जगह बने खड्डो के कारण वाहन पलट भी रहे हैं। इस मार्ग को सही कराने के लिए खंडेल, कुरज, रेलमगरा व दरीबा तक के ग्रामीणों व व्यापार मंडलों ने कई बार शिकायत की। साथ ही बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं को लेकर रेलमगरा पुलिस थाने में सीएलजी बैठकों में भी सदस्यों ने इस मुद्दे को उठाया, लेकिन न तो विभाग द्वारा कोई कार्रवाई की गई और न ही प्रशासनिक अफसरों द्वारा ही कोई समाधान निकाला गया।

ग्रामीणों में आम चर्चा है कि क्षेत्र के दो दो प्रतिनिधि एवं एक मंत्री होने के बावजूद ग्रामीणों की समस्या की सुनवाई नहीं हो पा रही है। ग्रामीण व मतदाता यह चर्चा करने को मजबूर हो गया है कि यह तहसील दो पाटन के बीच फंसी होने से यह दुदर्शा हो रही है। विकास तो दूर तात्कालिक समस्या का समाधान भी नहीं हो रहा है।

इसी मार्ग पर बने अवैधानिक टोल नाके द्वारा अवैध वसूल्ीी की जा रही है, जिस पर भी सरकार व प्रशासन का ध्यान बार बार खींचने के बाद भी समाधान नहीं हॉ रहा है। क्योंकि यह टोल नाके राजनीतिक रसूखदारों के होने से सभी चुप रहते हैं। ग्रामीणों एवं व्यापार मंडलों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सड़कों का जीर्णोद्वार समय रहते नहीं होने पर सरकार एवं प्रशासन को जन आक्रोश का सामना करना पड़ेगा।

सिंचाई विभाग की लापरवाही से सड़कों पर व्यर्थ में बह रहा राजसमंद झील का पानी

कांकरोली से मोही मार्ग पर रेलवे स्टेशन से कुछ दूरी पर सड़क पर बहता राजसमंद झील के पानी से तलैया की मानिंद भरे भूखंड एवं बारिश की तरह तर मोही की सड़क।

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

रबी फसलों की बुवाई के लिए सिंचाई विभाग द्वारा राजसमंद झील से पानी छोड़ा गया पानी व्यर्थ में सड़कों पर बह रहा है। सिंचाई विभाग के अभियंताओं की बेपरवाही के चलते सिंचाई का पानी सड़क इन दिनों खेतों की बजाय व्यर्थ में मोही क्षेत्र में बह रहा है। कांकरोली से रेलवे स्टेशन से आगे पानी अब बंजर भूमि, भूखंडों को भरते हुए मुख्य सड़क पर नाले की मानिंद बहने लग गया है, जिसकी वजह से वाहन चालकों को भी सड़क से गुजरना मुसीबतभरा हो गया है।

44 वर्ष बार ऐतिहासिक राजसमंद झील ओवरफ्लो हुई और उसके बाद झील में ज्यादा से ज्यादा पानी रिजर्व रखने के लिए शहरवासियों के साथ ही विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों ने भी आवाज बुलंद की। इस पर जिला प्रशासन द्वारा कम से कम पानी व्यर्थ बहाने व पानी की हर एक बूंद का सदुपयोग करने के लिए जल संसाधन विभाग के अभियंताओं को निर्देशित भी किया गया। झील से फसलों की सिंचाई के लिए छोड़े जाने वाले पानी की प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए सहायक अभियंता व कनिष्ठ अभियंताओं तक की विशेष टीम भी गठित की। फिर भी टीम द्वारा कोई प्रभावी मॉनिटरिंग नहीं की जा रही है, जिसकी वजह से कई दिनों से नहरों का पानी खेतों की बजाय व्यर्थ में बह रहा है। इसके चलते सिंचाई के लिए छोड़े गए पानी की कोई सार्थकता नहीं रह गई है। इससे सिंचाई अभियंताओं से लेकर जनप्रतिनिधियों और प्रशासन के आला अधिकारियों की भूमिका भी सवालों के दायरे में आ गई है।

कब समझेंगे पानी की अहमियत

एक तरफ एक एक बूंद पानी के लिए सरकार जतन कर रही है। इसके लिए शहर-गांव ढाणी तक के लोगों को जागरुक करने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में राजसमंद झील से हजारों लीटर पानी व्यर्थ बह रहा है, मगर किसी को नजर क्यों नहीं आ रहा है। सवाल यह भी है कि क्या जल बचत के प्रयास सिर्फ स्लोगन या बैठकों तक ही सीमित होकर रह गए हैं। जब एक एक बूंद पानी के लिए इतने प्रयास किए जा रहे हैं, तो व्यर्थ में बह रहे हजारों लीटर पानी को बचाने के लिए कब ठोस प्रयास होंगे।

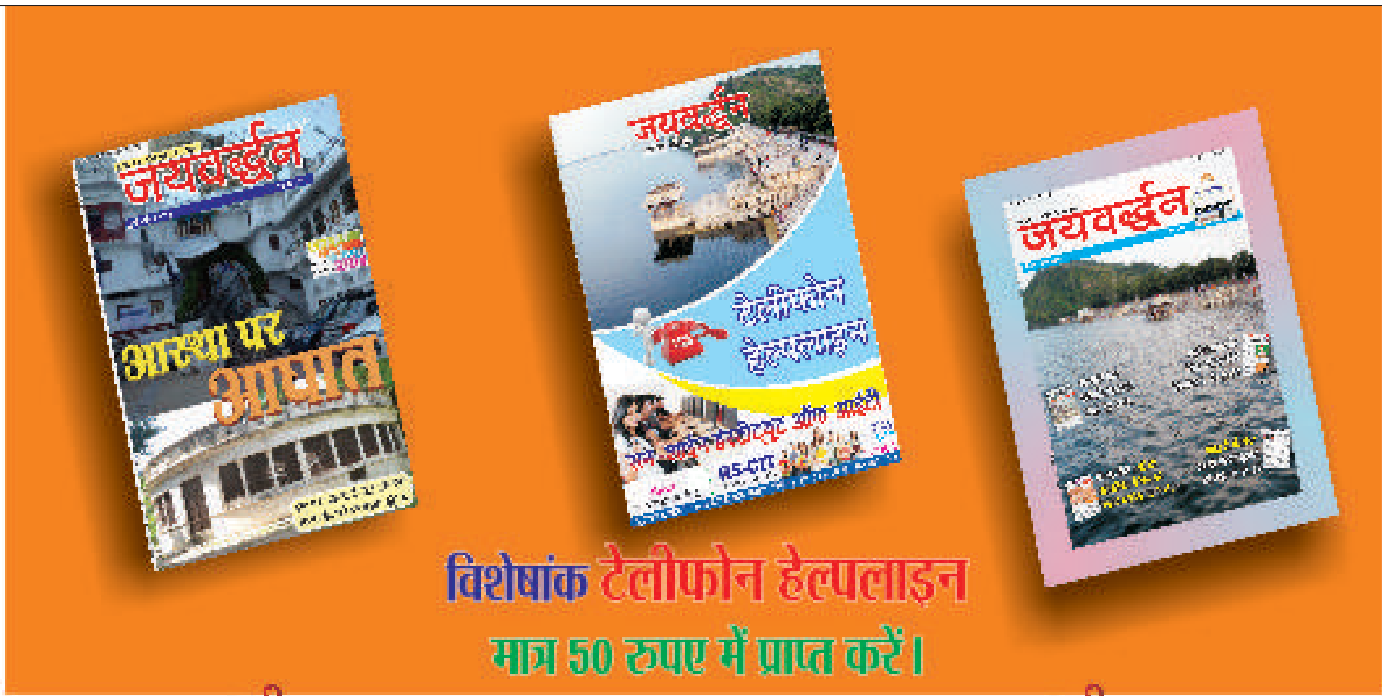

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

जागो रे भारत रा वीरां

सुण लो फौजी वीर, भारत माँ री पीर।
आंतकी गेर्‌यो रे भायां, केसरियां कसमीर।।
स्यांल्या कूके सीमाड़े पै, जागो प्रतिहार।
सोलंकी, चौहाना जागो, करी ने ललकार।।
जागो रै वगड़ावत वीरा, मारो दे हबीड़।
आंतकी गेर्‌यो रे भायां, केसरियां कसमीर।।
घाटियां गुंजावे, बोले हर-हर महादेव।
डूंगरपुर रा मीणा जागो, मेवाड़ा रा मेव।।
बलसाली जोधा ज्यांरी चमकी समसीर।
आतंकी गेर्‌यो रे भायां, केसरियां कसमीर।।
पंजाबी गुजराती जागो, हरियाणी जाट।
राजस्थानी गुजर, दूहा देवे चारण भाट।।
राठौड़ी रणबंका, ज्यारा फौलादी शरीर।
आतंकी गेर्‌यो रे भायां, केसरिया कसमीर।।
हिन्दु-मुस्लिम सिक्ख ईसाई, जागो रे मजदूर।
खेती हर करसाणा जागो, आलस नै कर दूर।।
लूटी नी सके रै बेरी, पूरखां री जागीर।
आतंकी गेर्‌यो रे भायां, केसरियां कसमीर।।
बोलो वंदेमातरम्, तिरंगो फेराय।
जन-गण मन गांवो, इक स्वर मिलाय।।
अनोखा तिरंगी वणै, भारत री तस्वीर।
आतंकी गेर्‌यो रे भायां, केसरियां कसमीर।

फतहलाल गुर्जर अनोखा
वरिष्ठ कवि
एवं इतिहासकार, कांकरोली

मेवाड़ रो मान

कर्मावती तो कुल री लाडली कुल रो दीप जलावती।
पद्मनी तो सुन्दरता सुं सारो महल चमकावती।
पन्ना तो धाय बण मेवाड़ी ताज बचावती।
ऐड़ी मारे मेवाड़ री क्षत्राणी, ऐड़ी मारे मेवाड़ री महाराणी।।

कर्मभूमि में धर्म भूमि में आपणो जश फैलावती।
मेवाड़ी सम्मान रे खातर रणभूमि में जावती।
वे स्वाभीमान रे खातर बलिदानी बण जावती।
ऐड़ी मारे मेवाड़ री क्षत्राणी, ऐड़ी मारे मेवाड़ री महाराणी।।

राणा सारी वाट जोवता में मुगली सेना आई थी।
वणी रात में राणी सा अंगारा री सेज सजाई थी।
सम्मान रे खातर राणी सा मोह ने लाग लागई थी।
ऐड़ी मारे मेवाड़ री क्षत्राणी, एड़ी मारे मेवाड़ री महाराणी।

माँ सुं बढ़कर इतिहास में एक धायपणो कहलायो।
मेवाड़ी चिराग रे खातर बेटा चंदन बली चढ़ायो।
ममता मोह ने आग लगाई स्वामी कर्तव्य निभायो।
ऐड़ी मारे मेवाड़ री क्षत्राणी, महाराणी और पटराणी।।

तनु कंवर सोलंकी, झीलवाड़ा
लेखक व प्रथम वर्ष छात्रा, बी एन कॉलेज उदयपुर

रिश्ते

अर्थ युग में रिश्ते अर्थहीन हो रहे हैं,
बाहर से हंसते हुए लोग अन्दर ही अन्दर रो रहे हैं।
रिश्ते नाते दम तोड़ रहे हैं, अब अपने बन रहे हैं पराये,
आज कल वो गैरो को अपना कर, अपनों को खो रहे हैं।
मां की ममता बिक रही है इस मॉर्डन युग में,
फिगर की चिंता में बेचारे जिगर, अमृतपान के लिए रो रहे हैं।
पिता हिरण्यकस्यप बन जाए, घर बेटा न दे रुपए
तो उसे घर से बेदखल कर, वो चेन की नींद सो रहे हैं
अर्थ युग में रिश्ते अर्थहीन हो रहे हैं...
कहाँ गए श्रीराम के भरत और लखन जैसे भाई, आजकल तो भाई
बन रहे हैं कसाई, वो प्रेम के नहीं नफरत के बीज बो रहे हैं।
श्रवण जैसे सपूत कहाँ मिलेंगे, इस कलयुग में जिते जी
माँ- बाप की सेवा करते नहीं, मरने के बाद जोर जोर से रो रहे हैं।
प्यार और पैसो की मोहताज घरवाली करवटे बदल रही है रातभर,
तो प्रीतम बाहरवाली के संग मस्ती से सो रहे हैं।
आज के लोग यारो रिश्ते निभा पाते नही,
सिर्फ दुनिया को दिखाने के लिए रिश्तों का बोझ ढो रहे हैं।
अर्थ युग में रिश्ते अर्थहीन हो रहे हैं,
बाहर से हंसते हुए लोग अन्दर ही अन्दर रो रहे हैं।

बख्तावरसिंह चुण्डावत 'प्रीतम'
आमेट, राजसमंद

जानिए क्या हैं महाशिवरात्रि की पौराणिक कहानी

महाशिवरात्रि भगवान शिव का त्यौहार है जिसका हर शिव भक्त बेसब्री से इंतजार करते है और शिव की भक्ति और भांग के रंग में मग्न हो जाते है। यह त्यौहार हिन्दू तिथि के हिसाब से फाल्गुन कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी/चतुर्दशी को मनाया जाता है । हिन्दू पुराणों के अनुसार इसी दिन सृष्टि के आरंभ में मध्यरात्रि मे भगवान शिव ब्रह्म से रुद्र के रूप में प्रकट हुए थे। इसीलिए इस दिन को महाशिवरात्रि या शिवरात्रि कहा जाता है। यह भी माना जाता है की इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस दिन लोग व्रत रखते हैं और भगवान शिव की पुजा करते है। शिवरात्रि के व्रत से एक पौराणिक कथा भी जुडी हैं।

महाशिवरात्रि की पौराणिक कथा

प्राचीन काल की बात है। एक गांव में गुरूद्रुह नाम का एक शिकारी रहता था। जानवरो का शिकार करके वह अपने परिवार का पालन पौषण किया करता था। शिवरात्रि के दिन जब वह शिकार के लिए गया, तब पूरे दिन शिकार खोजने के बाद भी उसे कोई जानवर नहीं मिला, परेशान होकर वह एक तालाब के पास गया और तालाब के किनारे एक पेड पर अपने साथ पीने के लिए थोडा सा पानी लेकर चढ गया। वह बेल-पत्र का पेड़ था और ठीक इसके नीचे एक प्राकर्तिक शिवलिंग भी था जो सूखे बेलपत्रों से ढका हुआ था जिसकी वजह से वह शिवलिंग दिखाई नहीं दे रहा था। अनजाने मे उसके हाथ से कुछ बेल-पत्र एवं पानी की कुछ बूंदे पेड़ के नीचे बने शिवलिंग पर गिरीं और जाने अनजाने में दिनभर भूखे-प्यासे शिकारी का व्रत भी हो गया और पहले प्रहर की पूजा भी हो गई। रात की पहली पहर बीत जाने पर एक गर्भिणी हिरणी तालाब पर पानी पीने पहुंची।

जैसे ही शिकारी ने उसे मारने के लिए अपने धनुष पर तीर चढ़ाया हिरणी ने घबरा कर ऊपर की ओर देखा ओर शिकारी से कांपते हुए स्वर में बोली हे शिकारी मुझे मत मारो। शिकारी ने कहा -वह मजबूर है क्योकि उसका परिवार भूखा है इसलिए वह अब उसे नहीं छोड सकता। हिरणी ने कहा कि वह अपने बच्चों को अपने स्वामी को सौंप कर लौट आयेगी। तब वह चाहे तो उसका शिकार कर ले। शिकारी को हिरणी पर दया आ गयी और उसने उसे जाने दिया। कुछ ही देर बाद एक और हिरणी अपने बच्चो के साथ उधर से निकली। उसने धनुष पर तीर चढ़ाने में देर नहीं लगाई। वह तीर छोड़ने ही वाला था कि मृगी बोली, हे शिकारी! इन बच्चो को मुझे इनके पिता के पास सौप आने दो और उसके बाद तुम चाहो तो मेरा शिकार कर सकते हो? मै तुम्हारे पास स्वयं उपस्थित हो जाउंगी।

शिकारी ने कहा हे मृग मै विवश हूँ मुझे अपने बच्चो और पत्नी के खातिर तुम्हरा शिकार करना ही होगा। हिरणी ने कहा जिस प्रकार तुम्हे अपने बच्चो की चिंता है ठीक उसी प्रकार प्रकार मुझे भी अपने बच्चो की चिंता है इसलिए मुझे अपने बच्चो की खातिर कुछ समय दे दो उसके पश्चात् में तुम्हारे सामने खुद आत्मसमर्पित हो जाउंगी।

हिरणी की अपने बच्चो के प्रति अपार ममता को देखकर शिकारी को उस पर भी दया आ गई और उसे भी जाने दिया। समय व्यतीत करने के लिए शिकारी बेल के वृष के पते तोड़ तोड़ कर नीचे फैकता गया तभी शिकारी को एक ओर हिरण दिखाई दिया और शिकारी ने उसे मारने हेतु अपना धनुष झट से उठा लिया। शिकारी को देख हिरण ने कहा अगर तुमने मेरे बच्चो और मेरी पत्नी का शिकार कर दिया है तो कृपया मेरा भी शीर्घ शिकार कर दो और यदि उन्हें जीवनदान दिया है तो मेरे प्राण भी कुछ समय के लिए दे दो ताकि मै अपने बच्चो से एक बार मिल सकू। इसके बाद मै तुम्हे वचन देता हूँ की मै तुम्हारे सामने उपस्थित हो जाऊंगा। शिकारी ने उसे भी जाने दिया और कुछ समय के बाद तीनो हिरण शिकारी के सामने उपस्थित हो गए। शिकारी दिनभर भूखा–प्यासा रहा और अंजाने में ही उससे शिवलिंग की पूजा भी हो गई और इस प्रकार शिवरात्रि का व्रत भी संपन्न हो गया। व्रत के प्रभाव से उसका मन पाप मुक्त और निर्मल हो गया और उसने तीनो हिरणों को छोड़ दिया। शिकारी भूतकाल में हुए अपने द्वारा निर्दोष जीवों की हत्या के पश्चाताप से दुखी था। तभी वहा भगवान शिव प्रकट हुए और बोले आज के बाद तुम्हे ऐसा काम नहीं करना होगा जो तुम्हे पाप और आत्मग्लानी के बोझ तले दबाता जा रहा है। शिकारी ने रोते हुए कहा की ऐसी कृपा मुझ पापी पर क्यों ?

भगवान शंकर ने शिकारी से कहा आज शिवरात्रि है और तुमने अनजाने में ही सही लेकिन मेरा व्रत और बेलपत्रो से मेरी पूजा की है। इसलिए तुम्हारा कायाकल्प हुआ है और तुम्हारा मन पवित्र हुआ है जो भी शिवभक्त महाशिवरात्रि के दिन यह कथा सुनेगा उसे वह सब फल मिलेगा जो तुम्हे मिला है।

आरती श्री शिवजी की

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा,
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा। टेक।
एकानन चतुरानन पंचानन साजे,
हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ।जय।
दो भुज चार चतुर्भज दश भुज ते सोहे,
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ।जय।
अक्षमाला बनमाला रूण्डमाला धारी ।
कंदन मृगमद लोचन भाले शशिधारी।जय।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रम्हादिक भूतादिक संगे।जय।
कर मध्ये कमण्डलू चक्र त्रिशूल धर्ता,
जगकर्ता जगहर्ता जगपालन करता । जय।
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों एका । जय।
त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी मन वाँछित फल पावे। जय।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी...
अब आप भी भेज सकते हैं खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभूत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे।
jaivardhanpatrika@.gmail.com

मासिक राशिफल : फरवरी 2018

मेष राशि : परिश्रम द्वारा आपके कार्य बनेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा। व्यापार की दृष्टि से समय उत्तम व्यतीत होगा। वहीं नौकरी पेशा व्यक्ति के लिए अनुकूल स्थिति रहेगी। जीवनसाथी को सहयोग देना होगा। पारिवारिक मामलों में व्यस्तता रहेगी।

वृषभ राशि : अपने जीवन साथी से आशाजनक लाभ के साथ सहयोग पाने में समर्थ होंगे। कुछ अकारण भी मन बैचेनी अनुभव करेगा, लेकिन जल्द ही सुधार भी होगा। भाग्य का साथ मिलने से आपके कार्य में प्रगति आएगी। प्रभाव में वृद्धि होगी। शत्रु परास्त होंगे।

मिथुन राशि : शत्रु पक्ष पर प्रभाव बढ़ेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। जिन्हें हाई ब्लड प्रेशर है, वे सावधानी बरते। आर्थिक मामलों में प्रयत्नपूर्वक सफलता पाएंगे। नौकरी पेशा के लिए समय ठीक ही कहा जा सकता है। विद्यार्थी वर्ग संभलकर चलें।

कर्क राशि : स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। वहीं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पारिवारिक मामलों में सहयोग लेकर चलना होगा। संतान पक्ष के कार्य बनेंगे। विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होंगे। दाम्पत्य जीवन में सुखद स्थिति रहेगी।

सिंह राशि : परिश्रम अधिक करने पर कार्य में प्रगति पाएंगे। शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहेगा। जमीन जायदाद संबंधी कार्य बनेंगे। मकान की समस्या दूर होगी। स्थानीय राजनीति में सफलता मिलेगी। आर्थिक प्रयासों से बाधा रह सकती। दाम्पत्य जीवन में मिलीजुली स्थिति रहेगी।

कन्या राशि : संतान पक्ष के कार्यों में अनुकूल स्थिति रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय सुखद रहेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होंगे। पारिवारिक सहयोग मिलने से राहत पाएंगे। शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहेगा।

तुला राशि : व्यापार व्यवसाय की स्थिति में सुधारजनक वातावरण रहेगा। पिता का सहयोग किसी कार्य में मिलने से प्रसन्नता रहेगी। पारिवारिक कार्य बनेंगे। वाहन आदि सुख में वृद्धि होगी। भाग्य साथ देने से सभी कार्य पूर्ण होंगे और शत्रु परास्त होंगे।

वृश्चिक राशि : समय का सदुपयोग कर अपने कार्यों में प्रगति पाएंगे। संचार माध्यम से शुभ समाचार सुनेंगे। पारिवारिक मामलों में सहयोगात्मक स्थिति रहेगी। व्यापार में वृद्धिपूर्ण समय रहेगा। नौकरी पेशा के लिए सुखद वातावरण रहेगा। शत्रु प्रभावहीन होंगे।

धनु राशि : विद्यार्थी के लिए समय उत्तम है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। संतान पक्ष के कार्य सम्पन्न होंगे। व्यापार व्यवसाय में सुखद स्थिति रहेगी। नौकरी पेशा भी अनुकूल स्थिति पाएंगे। शत्रु वर्ग पर प्रभाव बना रहेगा। आर्थिक योग बनेंगे।

मकर राशि : आर्थिक मामलों में सफलता के साथ आशाजनक परिणाम पाएंगे। साहसबल में वृद्धि होगी। अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। परिवार में महत्त्वपूर्ण कार्य होंगे। जनता से संबंधित कार्य बनेंगे। शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कुंभ राशि : अधिकारी वर्ग अनुकूल स्थिति पाएंगे। पारिवारिक कार्य में सावधानी रखनी होगी। नौकरी पेशा के लिए प्रगतिपूर्ण वातावरण बनेगा। व्यापार में संतोषजनक, वृद्धिदायक समय रहेगा। प्रभाव में वृद्धि पाएंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मीन राशि : महत्त्वपूर्ण कार्य बन जाने से प्रसन्नता के साथ उत्साह में वृद्धि होगी। धन से कुटुम्ब में सहयोग मिलेगा। वाणी का प्रभाव बढ़ेगा। संतान पक्ष में संतोषजनक वातावरण पाएंगे। दाम्पत्य जीवन में सुखद स्थिति रहेगी।

पंडित उमेश द्विवेदी
महामंत्री-सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान,
कसार जिला राजसमंद

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
प्रवेश प्रारम्भ
अधिकृत ज्ञान केंद्र
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
मूल निवास व जाति प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, पेन कार्ड, जमाबंदी, आधार व भामाशाह कार्ड
हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा | ICICI बैंक के पास केलवा
जिला-राजसमंद मो. 96498-13798, 9672994705
ई-मित्र व ऑनलाइन आवेदन की सम्पूर्ण सुविधा

हितेश लड्ढा : 09460333801, 09928863444
बेमिसाल मजबूती का नाम....
MANGALA
मंगला
TMT BAR
ANGLE & CHANNEL
ISO : 9001 : 2008 Certified Co.
मैसर्स चारभुजा स्टील
कोटक महेन्द्रा बैंक के सामने, 100 फीट रोड़, कांकरोली, जिला-राजसमंद 313324
Let Us Help Your Business
GROW
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

पत्रिका जनवरी 2018 के अंक में छपियोड़ी कविता रा कवि श्री भगवानसिंह जी सोलंकी सूं सादर निवेदन करणो चाऊं के वणां 'धाय' नाम सूं परिणहारी री वरज पै गीत रूपाळो लिख्यो पण, वणी में आप धाय पन्ना नै 'दासी' लिख कर आदर री जगां अपमान री ठोड़ ऊबी करी दीदी, जो राजपूतां अर गूजरां रौ माथोई नीचो व्हेई ग्यो। दासी तो राण्या रै डायचे में या सेवक के रूप में आवती ही। सचो इतिहास आगला अंक में छपवाओ तो लोगां में भ्रम नी रेई।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
इतिहासकार व पन्नाधाय गुर्जर शोध ग्रंथ लेखक

पत्रिका में 'हुणो म्हूं राजसमंद हूँ' लेख आदर्श व प्रेरक है, तो तीखी मिर्च के व्यंग्य भी आधुनिक युग के लिए प्रेरणास्पद है। अब यह पत्रिका समाज के समक्ष मार्गदर्शक के रूप में उभरने लगी है। इसमें आदर्श वाक्य व धार्मिक मुक्तक भी दिए जाए, तो नई पीढ़ी को सम्बल मिलेगा।

भगवानसिंह सोलंकी 'रजकण',
झीलवाड़ा, राजसमंद

वर्तमान में पत्रकारिता के अस्तित्व को बनाए रखना अत्यन्त दुरूह कार्य हैं। फिर निडरता, निर्भीककता व पारदर्शिता के साथ इस कार्य का कर पाना खतरे से खाली नहीं हैं। ऐसी स्थिति में जयवर्द्धन में प्रकाशित खबरें प्रशंसनीय हैं। विभिन्न विधाओं को समाहित की और शासन-प्रशासन की खामियों व सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार इस पत्रिका की विशेषता हैं।

डॉ. बसंतीलाल बाबेल (लावासरदारगढ़),
पूर्व न्यायाधीश व शासन उप सचिव राजस्थान

प्रेरक कविता- कहानियों के साथ आमजन से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठना पत्रिका की खासियत है। हर वर्ग का ख्याल रखते शिक्षा, स्वास्थ्य सलाह, मेवाड़ी चौपाल व कड़वा सच स्थायी कॉलम के माध्यम से सामाजिक सरोकार की यह अनूठी पहल है।

नरेन्द्र निर्मल,
साहित्यकार कांकरोली

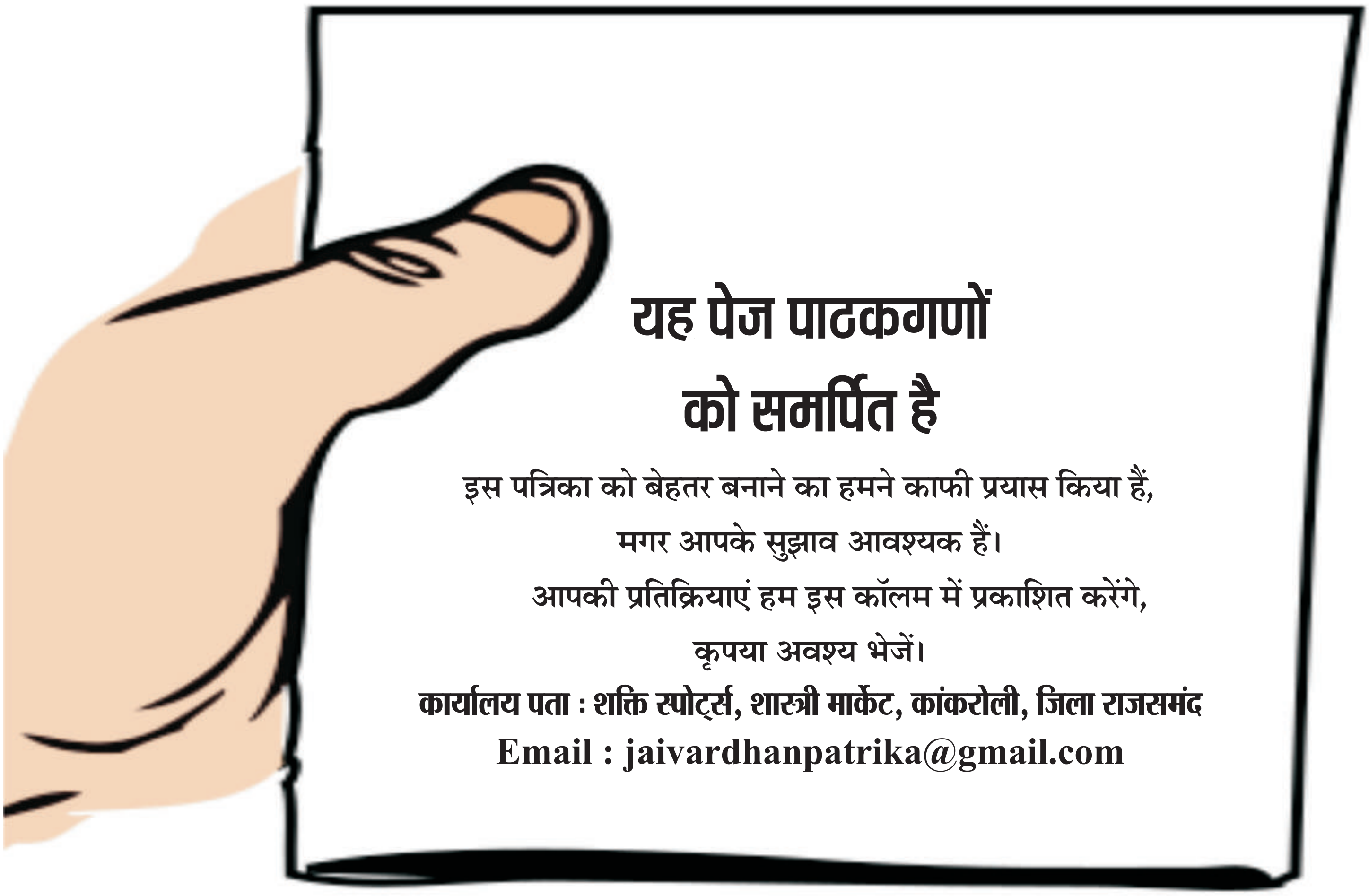

चाह नहीं मुझे

चाह नहीं मुझे आफ़ताब सी ऊंचाई की
चाह नहीं मुझे समन्दर सी गहराई की
न अकबर बनने का अरमां है मेरा
न आज़िम बनना चाहता हूँ
मैं तो बस मेरे वतन का अब्द बनना चाहता हूँ
न अदीब हूँ मैं
न अदालत है मेरी कोई
मैं अदम ही बन कर रहना चाहता हूँ
भले अंजाम मेरा अब्तर ही, क्यों न हो
मैं तो बस मेरे वतन का अब्द बनना चाहता हूँ
अब्द भले मेरा अब्तर ही क्यूँ न हो
पर मैं मेरे वतन पर
अब्र बन हमेशा मंडराता रहूँगा
अब्सार इस अब्ना की
न जाने क्यूँ भर आती है
माँ मैं तेरी अबस सेवा करूंगा
अकबर बनने की चाह नहीं मेरी
मैं हमेशा तेरा अब्द रहूँगा
चाह नहीं मुझे आफ़ताब सी ऊँचाई की
चाह नहीं मुझे समन्दर सी गहराई की

कवि राव तुफानसिंह सेवाडसा
गांव नादाना, रानी, जिला पाली
हाल संत मीरा मा वि चारभुजा

राजसमंद में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर
संकल्प कोचिंग क्लासेज
संरक्षक ओपी सर
निदेशक रतन सर
रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास कांकरोली
मो. 9929728005, 8769820124 911698712

5 माह से पाल की मरम्मत नहीं, हादसे का खतरा

राजसमंद. अगस्त माह में पावणा गांव में बादल फटने से जो तबाही मची थी, उसकी पांच माह बाद भी सार्वजनिक निर्माण विभाग ने सुध तक नहीं ली। पावणा में बादल फटने से नाथेला तालाब की आधी पाल टूट गई थी, जहां आज भी हादसे का खतरा मंडरा रहा है।

जानकारी के अनुसार कुंभलगढ़ पंचायत समिति के थुरावड़ पंचायत के नाथेला की पाल अगस्त, 2017 में बादल फटने से नाथेला ताबाल की पाल आधी टूट गई थी। तालाब की पाल टूटने की सूचना पर जिम्मेदार पर मौके पर पहुंचे, लेकिन सिर्फ कागजी कार्रवाई कर इतिश्री कर दी। वर्तमान में क्षतिग्रस्त पाल से वाहन चालक जान जोखिम में डाल कर गुजर रहे हैं, जिससे हर वक्त हादसे की आशंका है।

स्थानीय लोग भी परेशान

नाथेला में रहने वाले ग्रामीणों के लिए भी रोजमर्रा के कार्य के लिए रिछेड़ जाना पड़ता हैं। ग्रामीणों ने अधिकारियों से पाल को सही करवाने की भी मांग की, लेकिन जिम्मेदार ध्यान नहीं दे रहे हैं। यहां रहने वाले ग्रामीणों के सामान लाने के लिए भी दिक्कत हो रही हैं। क्योंकि क्षतिग्रस्त पाल पर कोई भी चार पहिया वाहन चालक आने से कतराते हैं। नाथेला तालाब की पाल पर चार पहिया वाहन निकले जितनी ही जगह हैं। एक इंच में इधर-उधर गाड़ी चली जाए, तो वाहन 20 फीट गहरी खाई में गिर सकते हैं। पावणा नाथेल में जाने का अन्य रास्ता ओलादर होकर जाता हैं, जिसकी दूरी 40 किलोमीटर हैं। इस कारण कई वाहन चालक खर्चा बचाने के चक्कर में अपनी जान जोखिम में डालकर निकल रहे हैं।

गजपुर-रिछेड़ का पुल भी नहीं हुआ ठीक

गजपुर से रिछेड़ मार्ग पर भी नाथेला का पुल, पावणा का पुल, रिछेड़ से रूडकी भागल सड़क का पुल, नीचला खाखरोदा से उपला खाखरोदा का पुल, अंटालिया से पड़ासली संपर्क सड़क का पुल व रिछेड़ में बावड़ी का पुल ड्रम डालकर बनाए, मगर बारिश में बह गए।

दाँत नी , माँ वाल्ली

एक माँ आपणै बारह वरस रा बेटा रे साथे आपणी उमर रा दन काड़ी री ही। बेटा रे सामी मां थाळी परोसी, बेटो रोटी खाई रियो हो। खावता-खावता वीं मां री आड़ी नाल्यो, देख्यो के मां री आंख्या में आंसू। मां ने पूछ्यो मां कई वात है? मां बोली कई नी बेटा। बेटो बोल्यो कई न कई वात है जरूर, ने थूं म्हारूं छुपाई री हैं, बोल कई कारण सूं थारी आंख्या में आंसू आया। थूं नी वतावै तो आ म्हूं रोटी नी खाऊं। मां बोली बेटा थारा भाग में लिख्यो हैं के अेक दन थूं घणो मोटो बड़ो आदमी वणैगा। थारा पां घणी दौलत धन सम्पति वेगा। नौकर, चार व्हेगा, चारी आड़ी नाम व्हेगा। बेटो बोल्यो तो इण में आंसू ढलकावा री कई वात है? थने तो राजी व्हेणो चावै के म्हारो बेटो अेक दन मोटो आदमी वणेगा। मां धूंधळी आंख्यां सू बेटा देखती बोली बेटा आदमी पा घणो धन अर् सम्पति व्हेय जाय तो वो आपणा परिवार ने भूल जावे, मां-बाप ने भूल जावे। थूं ही म्हारे बूढ़ापा री लाठी हैं, अेक थारो आज म्हने आसरो है, थूं ही जद म्हने भूल जायगा तो म्हूं किणरे आसरे जीऊंगा। बस ओ विचार आयो ज्यूं आंख्या सूं....। बेटो बोल्यो मां ओ थने कुणी वतायो के म्हूं आगे जाय ने घणो मोटो अर् धनवान आदमी वणुंगा। मां बोली के अेक साधु महात्मा आया हा वां थारा ऊपरला दोई दांत आगे निकल्या थका हैं देख ने आ वात म्हने वताई। ओ हुणताई ने बेटो घर बारणै जाय ने भाटा सूं आगळा ऊपरला दोई दांत तोड़ी ने आय ऊबो रियो, मां रै सामी। मां देख्यो के बेटा रे मूण्डा से लोई दरड़िया हैं, मां बोली ओ कई कीदो थूं लोयांझांण क्यू व्हियो। बेटो दोई आगला दान्त टूट्या थाका मां रे हाथ में देता थका कियो के अे वे दांत हैं जो म्हने घणो धनवान आदमी वणायरिया हा। अबे म्हूं धनवान अर वसो मोटो आदमी नी वणुंगा। म्हूं कठैई थां सू अळगो नी जाऊंगा, म्हूं थारो बेटो हूं थारी सेवा करणो ईज म्हारो धरम हैं। म्हूं थारे नकै अर् थूं म्हारे पा रैगा। मां आपणी साड़ी रा खूणा सूं बेटा रे मुण्डा रा लोई पूंछ्या। बेटा रा रे मनमे आपणी मां रे वास्ते असो लाड़ प्यार जाण्यो देखर मायड़ रा नैणा सूं गंगा-जमना खळ्कबा लागी अर् उण ने हिया सूं लपाय लिदो। ओ टाबर आगे जाय ने आचार्य चाणक्य रे नाम सूं ई जगत में जाण्यो ग्यो।

पुरूषोतम 'पल्लव'
कवि एवं साहित्यकार
1/142 हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी,
गोवर्द्धन विलास, उदयपुर

शक्ति स्पोर्ट्स
एक ही जगह पर
सभी तरह की
खेलकूद
सामग्री मिलने
एकमात्र स्थान

जे.के. मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली, जिला-राजसमंद
मो. 9414239648, 9414473275

G.M. फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन
मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन,
जीवन बीमा, मकान, प्लॉट, कृषि भूमि,
क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।
दिलीप जैन -9214384205, 9602997715
जेके मोड, कांकरोली, जिला-राजसमंद

शौचालय बनाम किराणा स्टोर

सेठानी की तबीयत अब पहले से काफी अच्छी थी। उन्हें अब पहले जितना संभालने की जरूरत नहीं रही। पिछले दो साल लाला रामदीन के थोड़े भरी गुजरे। सेठानी की तबीयत क्या खराब हुई उन्हें दुकान छोड़ छोड़ कर बार बार उन्हें संभालने घर जाना पड़ता था। वह तो भला हो मतई का जिसने ऐसे समय में अच्छे से दुकान में सब कुछ संभाल लिया, लेकिन अब नोटबंदी और जीएसटी अपना काम कर चुके थे। हालांकि रामदीन के सारे पुराने नोटों ने बहनोई जी के चार्टर्ड अकाउंटेंट वाले ऑफिस के सामने वाली बैंक के बेहद सुलझे हुए कैशियर के हाथों नया अवतार ले लिया था और व्यापार पर लगा जीएसटी भी उनके हिसाब से ग्राहक के सिर टैक्स ही था, पर इसकी ऐसी मार थी कि सेठजी भी क्या करते। उन्होंने मजबूरन मतई को जवाब दे ही दिया। उसकी बाकी बची तनख्वाह उसके द्वारा ली गई छुट्टियों और समय- समय पर घरेलू आवश्यकता के अनुसार लिए गए नए पुराने सामान में एडजस्ट कर ली गई थी। सेठ जी का कोमल मन मतई को विदा करते समय बहुत भारी हो गया था। आखिर मतई ने आड़े समय उनकी बड़ी मदद की थी और आज हिसाब के समय भी उफ तक नहीं किया। उन्हें लगा इस सेवा की कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें मतई को बतौर इनाम पांच हजार रुपए दे देना चाहिए। उन्होंने अपनी जेब में हाथ डाला और एक गांधी छाप नया पचास का नोट मतई की ओर बढ़ा दिया।

मतई बड़ा प्रैक्टिकल व्यक्ति था। उसने पचास का नोट जेब के हवाले किया और निर्विकार भाव से अपने घर की ओर चल दिया। वास्तव में वह तनाव में था। सेठ जी के यहां से चोरी छिपे वेतन वृद्धि और एरियर के रूप में लाए गए माल का इनकेशमेंट करने का कोई रास्ता उसे खोजना था। वह एक छोटी दुकान लगाकर उस सामान को बेचना चाहता था। पर दुकान बनवाने के लिए पैसा कहां से लाए चिंता के मारे मतई रात भर सो नहीं पाया, लेकिन सुबह की झपकी के बाद मतई ने अपने आप को तरोताजा महसूस किया। फिर भी उसे फ्रेश तो होना ही था। उसने लोटा उठाया व मुंह उठाकर जंगल की ओर जाने लगा। उसे पता था कि चौराहे पर सरपंच और सचिव के इस समय मिलने की अच्छी संभावना है। मतई का अनुमान बिल्कुल सही निकला। वे वहीं थे। सचिव व सरपंच गांव में उनचास शौचालयों का निर्माण करवा चुके थे। मतई को देखते ही उन्हें लगा कि इसको ग्यारह हजार देकर शौचालय बनवाना संभव नहीं है। यह पूरे बारह हजार लेकर ही मानेगा। पर उन्हें खुशी थी कि कम से कम उनकी फिफ्टी तो पूरी होगी।

तीनों का मिलन अद्‌भुत था। सरपंच ने स्वच्छता पर प्रवाह पूर्ण उद्‌बोधन दिया। मतई अपनी लघुता व बिना सहायता के शौचालय निर्माण में अपनी असमर्थता दयनीय स्वर में बयां कर दी। सचिव साहब ने अपनी दयालुता दिखाते हुए सरकारी मदद नि:शुल्क दिलाने का ऐलान कर दिया।

जहां चाह वहां राह, शौचालय बनकर तैयार था। सरपंच साहब ने फीता काटकर उद्घााटन किया, पर लोगों के मन में एक सवाल था कि मतई ने शौचालय का दरवाजा सड़क की तरफ क्यों रखा ? घर की तरफ रखता तो ज्यादा सुविधा रहती। मतई ने बताया कि अंदर की तरफ दरवाजा रखने से घर के अंदर बदबू फैलने का खतरा रहता। सब ने मतई की बुद्धिमानी की तारीफ की। अगले दिन लोगों ने मतई को लोटा लेकर जंगल जाते देखा। सरपंच ने उसे डांट पिलाई। सचिव ने बहुत घूर-घूर कर देखा। गांव वालों ने भी गर्दने चलाई। बेचारे मतई को अपना शौचालय उपयोग में लेना ही पड़ा।

आजकल मतई ग्राम सभा ही नहीं लगभग हर मीटिंग में आने लगा था। पर उसके वहां आते ही लोगों के सिर पर बल पड़ जाते। रह रह कर लोगों को सांस रोकनी पड़ती थी अब सब लोगों के पास रुमाल या गमछा तो था नहीं कि नाक पर रख ले। बदबू के मारे अगरबत्तियां भी बेअसर हो चली थी।

घबराकर सरपंच ने एक दिन पूछा क्यों हम सबकी जान के दुश्मन बने हो मतई, वैसे भी मीटिंग में तुम्हारा आना जरुरी नहीं है। जरूरत होगी तो हम तुम्हें बुलवा लेंगे' मतई रुआंसा हो गया। लगा रो पड़ेगा। बोला

गांव के विकास की बातें हो और मतई वहां ना हो यह मैं सोच भी नहीं सकता सरपंच साहब ! 'तो शौचालय का ठीक से उपयोग करो भाई ! हम सब का दम घुटता है। झल्लाकर सरपंच ने कहा। सब झगड़े की जड़ यह शौचालय ही है सरपंच साहब ! इस चार गुणा चार की साइज में ठीक से फ्रेश नहीं हो पाते हैं। कब्जी रहने लगी है आजकल। मतई ने मुंह बनाकर बहुत धीरे से कहा। पर बात सब में फैल गई। मीटिंग में खुसुर.फुसुर शुरू हो गई और धीरे.धीरे अधिकारियों व ग्रामवासियों में एक मौन सहमति हो गई। मतई सुबह जल्दी उठा। दातुन मुंह में दबाया लोटा उठाया और जंगल जाने लगा। सरपंच ने मुंह घुमा लिया। सचिव साहब ने अनदेखा कर दिया। गांव वालों ने राहत की सांस ली, परंतु सब के दिमाग में एक ही प्रश्न था कि मतई उस शौचालय का क्या करेगा। हां दो हजार का खर्चा तो हुआ। कुछ परिवर्तन करने पड़े पर गांव वालों को जवाब मिल गया था। शौचालय पर लिखा था **मतई किराना स्टोर** और दीवार की एक तरफ लिखा था **एक कदम स्वच्छता की ओर।**

परितोष पालीवाल
कवि एवं साहित्यकार,
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली

भीम-देवगढ़ विधानसभा के समस्त
निवासियों को
महाशिवरात्रि पर्व की
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
डॉ. विक्रमपालसिंह काछबली
मो. 8829970251, 8829980251
संस्थापक प्रमुख- मगरा शक्ति सेना, राजस्थान

महाशिवरात्रि के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएँ

HONDA
The Power of Dreams
सच कर देंगे सपने
अब नया साल होगा, यादगार
घर ले जायें होंडा क्लिक मात्र
₹2100*
मात्र ₹1650* की
आकर्षक ईएमआई पर
बडे काम की
CLIQ
फाईनेन्स : फाईनेन्सर की शर्तो के अनुसार

EX-SHOWROOM PRICE
₹42981
होंडा है HONDA
Lavish Honda
Nathdwara Road, Kankroli Distt-Rajsamand
Ph: 02952-220555, 220777 M.: 9785301610

बिजली, पानी, टेलीफोन के बिल, जाति प्रमाण पत्र, मुल निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड इत्यादी कार्य
ई-मित्र पर

e-mitra

कम्प्युटर शिक्षा के लिए राज्य सरकार द्वारा अधिकृत ज्ञान केन्द्र-

RS-CIT Computer Course

TALLY, ACCOUNTING

मनोज टेलिकॉम ई-मित्र & RS-CIT सेन्टर

पीर बावजी के सामने, यस बैंक के पास राजसमन्द मो. 98295556410

जन्म : 19.04.1970 स्वर्गवास : 15.02.2015

तृतीय पुण्यतिथि

रो उठती हैं आंखे देखकर तस्वीर तुम्हारी
क्यूं रूठ गई समय से पहले तकदीर हमारी।
आज भी ताकती हैं दरवाजे पर नजरें हमारी

हमारे प्रिय

श्री प्रकाशचन्द्र जोशी

S/O गोवर्धनलाल जी जोशी

की तृतीय पुण्यतिथि पर

हम अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

:: अनवरत स्मरणरत ::

भंवरीबाई-गोवर्धनलाल (माता-पिता), तारा जोशी (धर्मपत्नी),
एवं समस्त जोशी परिवार, ब्रह्मपुरी, नाथुवास, नाथद्वारा

श्री ॐ ऑप्टीकल

कांकरोली-नाथद्वारा-फतेहनगर-आमेट
Mob. 8233445440

क्या आपने कभी सोचा हैं?

आपके पेम्पलेट को कितने लोग पढ़ते हैं?

कितने सड़क पर बिखरे रहते हैं?

पेम्पलेट

छपवाने की अब जरूरत नहीं।

क्योंकि पेम्पलेट के खर्च में ही

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका

में अपने प्रतिष्ठान का

आप विज्ञापन लगा सकते हैं

सम्पर्क - शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली मो.9414239648,9414473275

जयवर्द्धन

राजसमंद की एकमात्र

लोकप्रिय मासिक पत्रिका

To श्रीमान्